धृति क्षमा दमोस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

Regd. No. 58414/94

स्वामी रामानन्द जी द्वारा संचालित

हमारी साधना

त्रैमासिक

वर्ष 31 • अंक 1 • जनवरी-मार्च 2024

मूल्य रु. 25/-

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती॥

करुणामयी सुमित्रा माँ

हमारी साधना

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।
न त्वहं कामये राज्यम्, न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां, प्राणिनामार्ति नाशनम्।।

वर्ष : 31 जनवरी-मार्च 2024 अंक : 1

भजन

रे मन भजु हरि नाम अघाई।
दोष दलन दुख हरन मधुर अति सरल सदा सुखदाई।
मेटति कठिन कुअंक भाल के भवभय देति भगाई।।
बिबसहु लयो नाम जिन बारक विपति परे अकुलाई।
तिनको बन्यों लोक परलोकहु उर सुख शांति समाई।।
मंगल भवन दानि रिधि सिधिको कहँ लगि करौं बड़ाई।
अगनित अघी अपावन हूँ जब सुमिरत ही गति पाई।।
रामसरन ते धन्य जीव जे जपत सदा लय लाई।
साँचो सार यहहि जीवन को संत रहे समझाई।।

भजन संख्या 9 **- स्व. श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल जी 'रामसरन'**

प्रकाशक
साधना परिवार
स्वामी रामानन्द साधना धाम,
संन्यास रोड, कनखल,
हरिद्वार-249408
फोन: 01334-311821
मोबाइल: 08273494285

सम्पादिका
श्रीमती रमना सेखड़ी
995, शिवाजी स्ट्रीट,
आर्य समाज रोड
करोल बाग,
नई दिल्ली-110005
मोबाइल: 09711499298

उप-सम्पादक
श्री रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'
1018, महागुन मैंशन-1,
इन्दिरापुरम,
गाजियाबाद-201014
ई-मेल: rcgupta1018@gmail.com
मोबाइल: 09818385001

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	रचयिता	पृ.सं.
1.	चित्र – करुणामयी सुमित्रा माँ		2
2.	भजन	स्व. श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल जी 'रामसरन'	3
3.	सम्पादकीय		5-7
4.	भजन – तुझे नारायण मिल जाएँगे		8
5.	भजन – जीवन पथ पर	श्रीमती चन्द्रावती शर्मा	9
6.	भजन – मोहन प्रेम बिना नहिं मिलते		9
7.	भजन – हो जायें बन्द आँखें		9
8.	गीता विमर्श – धारावाहिक	स्वामी रामानन्द जी	10-12
9.	माँ सुमित्रा जी का जन्मोत्सव		12
10.	गुरु वाणी – धारावाहिक		13
11.	Letters to Seekers – धारावाहिक		14-15
12.	भागवत के मोती – धारावाहिक		16
13.	गुरुदेव श्री स्वामी रामानन्द जी का जन्मोत्सव		17
14.	पूज्य साहू काशीनाथ जी के श्री गुरु महाराज के साथ अनुभव – षष्ठम भाग		18-21
15.	जीवन लक्ष्य	सुमित्रा माँ	22
16.	जैसी पढ़ाई वैसी कमाई		23
17.	संशोधन		23
18.	श्रद्धा एवं शास्त्रविधि		24-25
19.	Rising beyond Ego	Dinesh Bahl	26-27
20.	अखण्ड भजन का स्वरूप	डॉ. श्रीभीकमचन्दजी प्रजापति	27-30
21.	जन्मोत्सव शिविर दिसम्बर 2023 का विवरण व प्रवचन सार		31-35
22.	कार्यकारिणी की बैठक का विवरण (18 दिसम्बर 2023)		36-37
23.	शोक समाचार		37
24.	दानदाताओं की सूची		38-39
25.	श्री गुरुदेव निर्वाण दिवस साधना शिविर-2024 – सूचना		40
26.	दिगोली शिविर-2024 – सूचना		40
27.	बाल-साधना-शिविर-2024 – सूचना		41
28.	श्री स्वामी रामानन्द जी साधना साहित्य		42
29.	श्री स्वामी रामानन्द जी जन्मोत्सव के चित्र		43-44

Printed and Published by Shri Dinesh Bahl for and on behalf of Swami Ramanand Sadhna Pariwar, Sadhna Dham, Sanyasa Road, KANKHAL-Haridwar (Uttarakhand) and printed at Rakmo Press Pvt. Ltd., C-59, Okhla Industrial Area Phase-I, New Delhi-110020.

सम्पादकीय

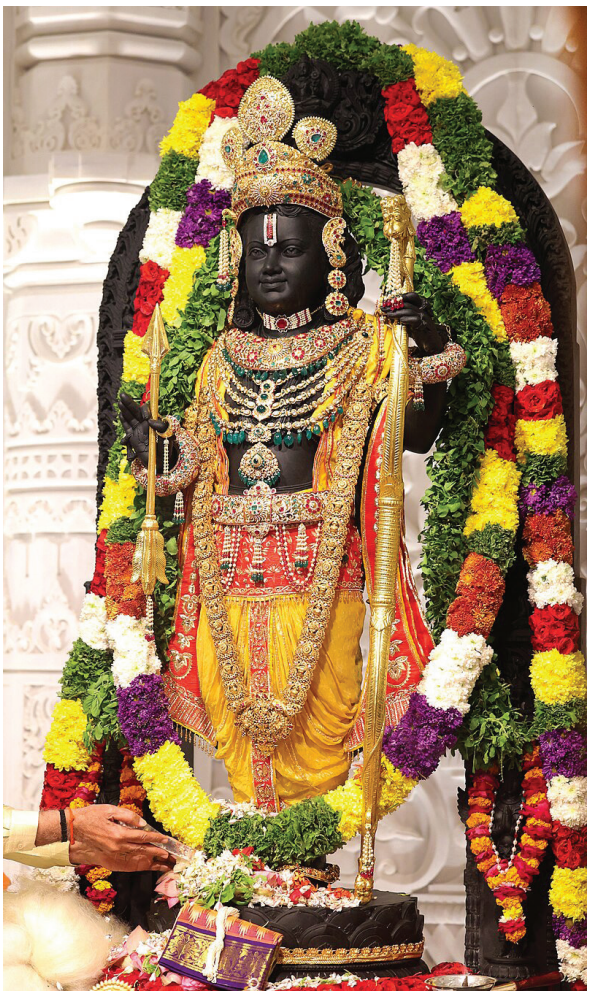

हमारी साधना के सभी पाठकों को जय श्रीराम, प्रेम भरा अभिनन्दन व नव वर्ष 2024 की शुभकामनायें।

इस तिमाही में राष्ट्रीय स्तर पर एक अत्यन्त महत्वपूर्ण व सुखद घटना घटित हुई है जिसने समस्त देशवासियों में एक उमंग, एक उत्साह का संचार कर दिया है, जिससे कोई भी भारतवासी अछूता नहीं रहा चाहे वह बालक हो, युवा हो या वृद्ध हो, स्त्री हो या पुरुष हो। वह घटना है 22 जनवरी 2024 को अयोध्या के नवनिर्मित भव्य राम मन्दिर में रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा जो दोपहर 12:00 बजे से 1:00 बजे के मध्य देश के लोकप्रिय प्रधान मन्त्री जी के कर कमलों द्वारा वैदिक विधि विधान से सम्पन्न की गई। इस दिन को न केवल भारत में रहने वाले हिन्दुओं ने बल्कि प्रवासी भारतीयों ने विदेशों में रहते हुए भी अभूतपूर्व हर्ष और उल्लास के साथ मनाया। हर घर और मन्दिर में दीपक जलाये गये, पूजा, आरती, कीर्तन, सुन्दरकाण्ड, अखण्ड रामायण का पाठ, हर गली मोहल्ले में झांकी, जुलूस, नृत्य आदि का आयोजन किया गया। ऐसा प्रतीत होता था कि रामायण में वर्णित राम के बनवास से आगमन पर जिस प्रकार अयोध्या में हर्ष और उल्लास मनाया गया था उसी दृश्य की पुनरावृत्ति जैसे पूरे देश में कर दी गई हो। यह दिन, 22 जनवरी हजारों वर्षों के लिये ऐतिहासिक बन गया है। कहने की आवश्यकता नहीं कि श्री राम भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं और भारतवासियों के जीवन हैं। देश की कल्पना राम और रामचरितमानस के बिना नहीं की जा सकती।

'श्रीराम-जन्मभूमि' वास्तव में कोई मन्दिर-मस्जिद का विवाद नहीं था। कारण कि मन्दिर या मस्जिद तो कहीं भी बनाये जा सकते हैं परन्तु जन्मभूमि का स्थान बदला नहीं जा सकता, वह भी ऐसी जन्मभूमि जो साक्षात् परब्रह्म परमात्मा के अवतार की भूमि हो। भगवान् श्रीराम पूर्णब्रह्म

परमात्मा के रूप में अपनी सम्पूर्ण कलाओं के साथ इस पवित्र भूमि पर अवतरित हुए थे। यह जन्मभूमि करोड़ों देशवासियों का दिव्य स्मृति-स्थल है जो अति पवित्र है, जहाँ थोड़ी साधना और उपासना करने पर भी सिद्धि प्राप्त हो जाती है और जिसके दर्शन मात्र से अमोघ फल की प्राप्ति होती है। सन्त तुलसीदास ने रामचरितमानस के आरम्भ में ही अवधपुरी की वन्दना इस प्रकार की है –

बंदउँ अवध पुरी अति पावनि।
सरजू सरि कलि कलुष नसावनि॥

मानस के उत्तरकाण्ड में स्वयं भगवान् राम ने अयोध्या की स्तुति में कहा है –

जद्यपि सब बैकुंठ बखाना।
बेद पुरान बिदित जगु जाना॥
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ।
यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ॥
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि।
उत्तर दिसि बह सरजू पावनि॥
जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा।
मम समीप नर पावहिं बासा॥

दुर्भाग्यवश अपने आराध्य भगवान् श्री रामचन्द्र जी की जन्मभूमि के मन्दिर में वर्षों से ताला लगा था, हम प्रवेश तक नहीं कर सकते थे। अब भगवत्कृपा से यह भूमि मुक्त हुई। करोड़ों हिन्दुओं की आस्था की प्रतीक अयोध्या स्थित श्री राम जन्मभूमि से सम्बन्धित सदियों पुराना विवाद भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 9 नवम्बर 2019 को दिये गये ऐतिहासिक निर्णय के साथ समाप्त हो गया। इस अवसर पर भारतवासियों का आनन्द विभोर होना स्वाभाविक है क्योंकि अब वे अपने आराध्य की जन्मस्थली पर जाकर दर्शन-पूजन के साथ-साथ दिव्य आनन्दानुभूति प्राप्त कर सकते हैं। वस्तुतः यह उस सत्य की विजय है जिसे पहले विधर्मियों ने ध्वस्त करने का कुत्सित प्रयास किया, तदनन्तर कुछ संगठित शक्तियों ने अपने निहित स्वार्थों के लिये जटिल बनाकर हल नहीं होने दिया; पर सत्य की सदैव विजय होती है, असत्य की नहीं – **'सत्यमेव जयति नानृतम्'**।

इस सन्दर्भ में सुधी पाठकों के लिये श्री राम जन्मभूमि मन्दिर की विस्तृत जानकारी अप्रासंगिक न होगी जो नीचे दी जा रही है –

1. मन्दिर परम्परागत नागर शैली में निर्मित।
2. मन्दिर की लम्बाई (पूर्व-पश्चिम) 380 फुट, चौड़ाई 250 फुट एवं ऊँचाई 161 फुट।
3. तीन मंजिला मन्दिर, प्रत्येक मंजिल की ऊँचाई 20 फुट, कुल खम्भे 392, कुल दरवाजे 44.

4. भूतल गर्भगृह में श्रीराम के बालरूप (रामलला) का विग्रह। प्रथम तल गर्भगृह में - श्रीराम दरबार।
5. कुल मण्डप पाँच – नृत्य मण्डप, रंग मण्डप, गूढ़ मण्डप (सभा मण्डप), प्रार्थना मण्डप तथा कीर्तन मण्डप।
6. खम्भों और दीवारों में देवी-देवताओं तथा देवांगनाओं की मूर्तियाँ।
7. प्रवेश पूर्व से 32 सीढ़ियाँ (ऊँचाई 16.5 फुट) चढ़कर सिंहद्वार से होगा।
8. दिव्यांग तथा वृद्धजनों के लिये रैंप एवं लिफ्ट की व्यवस्था।
9. चारों ओर आयताकार परकोटा (प्राकार) - लम्बाई 732 मीटर, चौड़ाई 4.25 मीटर। परकोटे के चार कोनों पर चार मन्दिर - भगवान सूर्य, शंकर, गणपति व देवी भगवती। परकोटे की दक्षिणी भुजा में हनुमान एवं उत्तरी भुजा में अन्नपूर्णा माता का मन्दिर।
10. मन्दिर के समीप पौराणिक काल का सीताकूप।
11. श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर परिसर में प्रस्तावित अन्य मन्दिर – महर्षि वाल्मीकि, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, महर्षि अगस्त्य, निषादराज गुह, माता शबरी एवं अहिल्या।
12. दक्षिणी-पश्चिमी भाग में नवरत्न कुबेर टीले पर स्थित शिव मन्दिर का जीर्णोद्धार एवं रामभक्त जटायु राज की प्रतिमा की स्थापना।
13. मुख्य मन्दिर का भवन लगभग 2.70 एकड़ भूमि पर बना है जबकि पूरा परिसर लगभग 70 एकड़ में फैला है। इस हिसाब से यह दुनिया का चौथा सबसे बड़ा हिन्दू मन्दिर है।
14. मन्दिर के निर्माण में लगभग 1800 करोड़ रुपये की लागत आई है।

रामलला की प्राणप्रतिष्ठा के बाद से रामलला के दर्शनार्थियों की संख्या प्रतिदिन औसतन ढाई लाख से अधिक की है जो पहले मात्र 20-25 हजार थी। आने वाले समय में भारत की अर्थव्यवस्था में अयोध्या धाम का बहुत बड़ा योगदान होने की आशा है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक मन्दिरों और तीर्थस्थलों का जो विकास एवं नवीनीकरण गत वर्षों में दृष्टिगोचर हुआ है उससे ऐसा प्रतीत होता है जैसे हमारा महान भारत देश राम और कृष्ण की खोई हुई विरासत को पुनः प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हो रहा है।

सभी पाठकों को पुनः बहुत-बहुत शुभकामनायें।

आगामी पत्रिकाओं के लिये साधकों के लेख सदा ही आमन्त्रित हैं जो निम्न email-id और whatsapp नम्बरों पर भेजे जा सकते हैं –

mail-id: rcgupta1018@gmail.com

mobile number: 9818385001, अथवा 9711499298, 9582891643

तुझे नारायण मिल जाएँगे

तुझे नारायण मिल जाएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।
तुझे भव से पार कराएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
नरसिंह रूप में दौड़े आए प्रहलाद ने गाया हरि हरि।
अग्नि से उन्हें बचाया था और मन में बसाया हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
वो तेरे भी कष्ट मिटाएंगे बस गाए जा तू हरि हरि।
तुझे नारायण मिल जाएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।
तुझे भव से पार कराएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
राम रूप में जनम लिया है जग ने पुकारा हरि हरि।
दीन हीन लाचारों का है बस एक सहारा हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
तुझ को भी गले लगाएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।
तुझे नारायण मिल जाएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।
तुझे भव से पार कराएँगे बस गए जा तू हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
श्याम रूप में प्रकट हुए हैं टेर सुनी जब हरि हरि।
धन्य हुआ है जीवन सारा बोल रहे सब हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
तेरे बिगड़े काम बनाएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।
तुझे नारायण मिल जाएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।
तुझे भव से पार कराएँगे बस गए जा तू हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
सारे जगत में गूँज रहा है नाम ये प्यारा हरि हरि।
जगत की प्यास मिटा देती है अमृत धारा हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....
तुझे अपना दरस कराएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।
तुझे नारायण मिल जाएँगे बस गाए जा तू हरि हरि।
तुझे भव से पार कराएँगे बस गए जा तू हरि हरि।।
हरि ॐ हरि ॐ ....

जीवन पथ पर

अपनी राह चला चल राही, डरना मत तूफानों से।
आँधी आये, दुर्दिन छाये, घबरा मत अनजानों से।।
इन मेहमानों का आना, कुछ बुरा नहीं इस जीवन में।
बाधाओं को पार किया तो, लहराया सुख कण-कण में।।
मिलनी राह नहीं है मुश्किल, चलना उस पर है दुस्तर।
देख न घबरा लम्बे पथ को, बढ़ता चल तू साहस कर।।
चलते चलते पा जायेगा, जीवन में जो पाना है।
रुदन छोड़ आगे ही बढ़ना, मंजिल सुगम बनाना है।।
चलते चलते मिल जाती है, इक दिन सरिता सागर से।
बढ़ते बढ़ते मिल लेता है, इक दिन चन्दा पूनम से।।
तू भी इक दिन पा ही लेगा, उस प्यारे जीवन-धन को।
ज्ञान चक्षु खुलते ही तू, तर जायेगा भव-सागर को।।

– श्रीमती चन्द्रावती शर्मा

मोहन प्रेम बिना नहिं मिलते

मोहन प्रेम बिना नहिं मिलते चाहे कर लो कोटि उपाय।
मोहन प्रेम बिना ....
मिले न यमुना सरस्वती में मिले न गंगा न्हाय।
मिले न यमुना ....
प्रेम सरोवर में जब डूबे प्रभु की झलक लखाय।।
मोहन प्रेम बिना ....
मिले न वह पर्वत निर्जन में, मिले न मन भटकाय।
मिले न वह पर्वत ....
प्रेम बाग घूमे तो प्रभु को, घट में ले उतराय।।
मोहन प्रेम बिना ....
मिले न वह पण्डित ज्ञानी में, मिले न ध्यान लगाय।
मिले न वह पण्डित ....
ढाई अक्षर प्रेम पढ़ो तो, नटवर नयन समाय।।
मोहन प्रेम बिना ....
मिले न वह मन्दिर मूरत में, मिले न अलख जगाय।
मिले न वह मन्दिर ....
प्रेम बिन्दु जब दृग से टपके तुरत प्रकट हो जाय।।
मोहन प्रेम बिना ...

हो जायें बन्द आँखें

हो जायें बन्द आँखें तेरा ध्यान करते करते।
इक साथ ये ही होगा तेरा नाम चलते चलते।।
हो जायें बन्द आँखें ....
यश आप का मैं गाऊँ दुनिया से चला जाऊँ।
हो जाए बन्द वाणी गुणगान करते करते।।
हो जायें बन्द आँखें ....
सुध तन की भूल जाऊँ कभी होश में न आऊँ।
प्रभु प्रेम वाले अमृत का पान करते करते।।
हो जायें बन्द आँखें ....
तेरे ध्यान में रहूँ मैं, हर श्वास में जपूँ मैं।
यश प्रेम सदगुरु का बस गान करते करते।।
हो जायें बन्द आँखें ....
देखा करूँ मैं राहें जब तक न आप आयें।
तब तक न तन से निकलें ये प्राण चलते चलते।।
हो जायें बन्द आँखें ....
तेरे धाम पहुँच जाऊँ या किसी के काम आऊँ।
शुभ कर्म पाठ पूजा तेरा जाप कर करते करते।।
हो जायें बन्द आँखें ..

गीता विमर्श

श्रीमद्भगवद्गीता पंचमोऽध्याय

(गतांक से आगे)

आगामी दो श्लोक कर्मसंन्यासी के भीतर का हाल कहते हैं, ध्यान की चर्चा करते हैं। भीतर कैसा हो जाना चाहिए निर्वाण लाभ करने के लिए, यह बताते हैं। वह आगामी अध्याय के प्रसंग का आधार है।

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः।
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥27॥
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ॥28॥

'वह सदा ही मुक्त है जो बाहर के स्पर्शों को बाहर करके, नेत्रों को भ्रूमध्य में लगाकर, प्राण तथा अपान को सम करके, नासिका के भीतर ही विचरने वाला कर लेता है। जिसकी इन्द्रियाँ मन और बुद्धि वश में हैं, जो इच्छा, भय तथा क्रोध से रहित है और जो मोक्ष परायण है'।।27, 28।।

वह ध्यान में बैठता है तो कैसा होता है?

बाह्य स्पर्शों को बाहर रखता है। वह सुनता नहीं, देखता नहीं और सूँघता नहीं। वह अपनी चेतना को पार्थिव-स्तर से ऊपर उठा लेता है। तभी इन पार्थिव स्पर्शों के प्रभावों से अछूता रहता है। वह ध्यान कैसे लगाता है? नेत्रों को भ्रूमध्य में लगाता है – वहाँ देखता है। खुली आँखों से इस अभ्यास को करने वालों में से कइयों ने आँखें खराब की हैं। ध्यान के विषय में तो पुस्तकों को पढ़कर अभ्यास करना ठीक नहीं रहता। किसी जानकार पथ-प्रदर्शक को पाकर उसकी बात माननी ही ठीक रास्ता है। बड़ा गहरा प्रभाव रखता है भीतर के जगत् में प्रवेश, जो इस प्रकार की चेष्टाओं से हो जाता है। व्यक्ति का सन्तुलन बिगड़ सकता है, शारीरिक तथा मानसिक हानि भी हो सकती है। यह खेल नहीं है, इसमें कई रहस्य हैं जो जानकार ही उचित होने पर बतायेगा।

और 'प्राण तथा अपान को जो सम कर लेता है'। प्राण वह जो ऊर्ध्वगामी है और अपान वह जो अधोगामी होता है। श्वासक्रिया में वायु को बाहर निकालने वाली और भीतर ले जाने वाली शक्तियों का साम्य होने से प्राण में समता आती है। भीतर एक सन्तुलन पैदा होता है।

साथ ही साथ प्राण सूक्ष्म भी हो जाना चाहिए। जैसे-जैसे प्राण का संयम होता है और मन में निश्चलता होती है, प्राण सूक्ष्म होता जाता है। सामान्यतया व्यक्ति श्वास लेता है तो इतने ज़ोर से लेता है कि भीतर से निकलने वाले श्वास के वेग का परिचय 9-10 इंच तक मिलता है। धीरे-धीरे वह बल कम होता जाता है। अन्त में ऐसी स्थिति आती है कि यह गति नासिका के भीतर तक ही सीमित रहती है। बाहर से श्वास-प्रश्वास का पता ही नहीं चलता। यह समाधि की स्थिति होती है।

प्राण तथा मन का गहरा सम्बन्ध है। प्राण की निश्चलता से मन स्वतः निश्चल हो जाता है, और इसके विपरीत भी।

जो 'इस प्रकार से अपने को शान्त कर सकता है – समाधि लाभ कर सकता है'। परन्तु इतना ही काफी नहीं। यह सब अभ्यास से हो सकता है। परन्तु इतना ही होने से व्यक्ति मुक्त नहीं हो सकता, और परिवर्तन भी आवश्यक है। मन तथा बुद्धि में मौलिक परिवर्तन चाहिए।

पहिली माँग है संयम की। इन्द्रियों का, मन तथा बुद्धि का संयम होना चाहिए। दिनों की समाधि लगाने वाले भी इस संयम से रहित हो सकते हैं। लम्बी समाधि तो मदारी का खेल है। संयम मदारी का खेल नहीं है, विशेषकर मन तथा बुद्धि का संयम।

'मोक्षपरायणः' मोक्ष के पीछे पड़ा हुआ। मोक्ष-प्राप्ति के लिए कटिबद्ध। प्रकृति के बन्धन से मुक्ति ही जिसने जीवन का लक्ष्य बनाया है। जो श्रेयमार्ग का चुनने वाला है। और मन की स्थिति?

इच्छा, भय तथा क्रोध से रहित। इच्छा काम का ही रूप है। सभी कामनाओं से रहित। वही तो चंचल कर देती है चित्त को। भय तथा क्रोध क्षुब्ध करते हैं और आसक्ति मूलक होते हैं हमारे भय।

जो इन विकारों से रहित है, वह हमेशा मुक्त ही है।

ये दोनों श्लोक भी उसी तस्वीर को पूरा करते हैं। ध्यान के विषय की चर्चा अवश्य नई चीज़ है, इस प्रसंग में।

यहाँ साधना के मार्ग का निर्देश है। ज्ञानयोगी को कर्म करना होगा। किस निष्ठा से यह बता दिया गया था (श्लोक 8)। वैसा करने से कर्मबन्धन न होगा, आत्म-शोधन होगा। इन्द्रियों तथा मन और बुद्धि का संयम करना होगा। इसके बिना कदम आगे न उठेगा। सारा ज्ञान गोबर हो जायेगा। इसके साथ-साथ एकान्त में बैठकर ध्यान करना होगा, उसका तरीका बताया गया है। इसके परिणामस्वरूप पार्थिव-चेतना से व्यक्ति मुक्त होने लगेगा। क्रमशः ऊँची निर्गुण निर्विकल्प स्थिति की ओर पाँव उठता जायेगा।

अध्यात्म के विशाल भाव तथा प्रयोजन को न समझ कर व्यक्ति प्रायः ध्यान पर ही अधिक ज़ोर देता है, क्या ज्ञान के मार्ग वाले और क्या भक्ति के रास्ते वाले। निष्ठा, कर्म तथा संयम जो रास्ता तैयार करते हैं, जो निर्मल करते हैं और व्यक्ति के भीतर को निश्चल करते हैं, जिनके कारण प्रकृति में मौलिक परिवर्तन हो सकता है – ज्ञानमार्गी उसकी परवाह नहीं करता। बिना उस सब के ध्यान तो खेल हो जाता है। निराधार चेष्टा होती है जिससे स्थायी लाभ की गुंजाइश कम रहती है।

भगवान् के प्रति समुचित निष्ठा का बनाना, अपने कर्म में समुचित भावना को लाना, उसके स्मरण का काम-काज करने में अभ्यास करना, समर्पण की भावना को स्थिर करना और विशुद्ध करना – प्रभुचरणों में प्रीति के ये सभी पूर्वरूप हैं। भक्त की निधि है प्रभुचरणों का प्यार। आँखें मूँदकर होने वाली प्रतीतियाँ वास्तव में वह महत्त्व नहीं रखतीं जो यह सभी कुछ रखता है। यह कुछ होगा तो वह स्वयं होगा ही। नाम का स्मरण होना ही चाहिए क्योंकि वह प्रीति को पैदा कर सकता है और जो कुछ वांछित है, वह भी ला सकता है। उससे जगती है निष्ठा और भावना परन्तु अनुभूतियों की लालसा मुझे तो नासमझी ही प्रतीत होती है। भक्तिमार्ग में इस प्रकार की समाधि कोई महत्त्व नहीं रखती।

अब अन्तिम श्लोक में भगवान् परम तथ्य को प्रकट करते हैं।

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥29॥

'यज्ञों तथा तपों का उपभोग करने वाले, सब लोकों के महेश्वर, सब भूतों के परम मित्र मुझको जानकर वह शान्ति को प्राप्त करता है'।।29।।

वही साधक जो मुक्त है (श्लोक 28), साधनपथ में चलता हुआ जब मुझे जानता है तब शान्ति को पाता है। 12वें अध्याय के चतुर्थ श्लोक में भी तो कहा था – 'वे मुझे ही प्राप्त करते हैं'। 18वें अध्याय के 54 तथा 55वें श्लोक में बताया – 'कैसे मुझे ही प्राप्त करते हैं'। ऐसा साधक सब भूतों के प्रति सम हुआ मेरी पराभक्ति को पाता है। भक्ति से मुझे जानता है, मैं जो और जितना हूँ। तब वह मुझे तत्त्व से जानकर मुझमें प्रवेश करता है।

वह भगवान् को क्या जानता है इस प्रकार की साधना के परिणामस्वरूप? यह श्लोक में कहा है।

भगवान् 'यज्ञ तथा तपों के भोक्ता हैं'। भोक्ता खाने वाला होता है। यज्ञ तो बताया जा चुका है। वह यज्ञेश्वर है ही, यह हम जानते हैं। सभी यज्ञों का परम इष्ट वह है। तप वह साधन है जिससे आपा तपकर

निर्मल होता है, जैसे सोना तप जाने पर निर्मल होता है, जैसे ज्वर (ताप) निर्मल करता है देह को तपाकर। प्रभु तपों के भी भोक्ता हैं। ऐसे प्रयत्नों को वे स्वीकार करते हैं और उनका फल देते हैं। वह रीझते हैं इनके द्वारा, यह अर्थ है।

जो दूसरे देवताओं के निमित्त होता है, उसे भी वास्तव में वे ही स्वीकार करते हैं क्योंकि सभी में भोक्ता तो वही है। जो अग्नि बनकर बैठा भोग को स्वीकार करता है, देवताओं के भीतर भी वही भोक्ता है। जब यह समझ आती है तो समूचा जीवन ही प्रभु के प्रति देन दीखने लगता है। मानुषी लेन-देन उसी में दीखने लगते हैं और वह विकास का अधिष्ठाता बन जाता है यज्ञपति के रूप में। हम सबको आगे ले जाता है, यज्ञ तपोमयी लीला के द्वारा।

वह 'सब लोकों का महान् ईश्वर है'। लोकों के लोकपति होते हैं परन्तु, वह उनका भी पति है। वह ईश्वरों का ईश्वर है। उसी का संकल्प देव, मनुष्य और असुरों के द्वारा भी सिद्ध होता है। उसकी अनुमति से ही होता है जो भी भला बुरा यहाँ होता है। उससे बड़ा कोई नहीं। उससे परे कुछ नहीं। उसकी बराबरी करने वाला कोई नहीं। भीतर आँख खुलने पर ही उसकी अनन्त शक्ति और सत्ता का भान होता है और व्यक्ति वास्तव में उसके आगे झुक पाता है। तभी समर्पण का अर्थ समझ में आता है और जाना जाता है परम दयामय देव की परम करुणा का रहस्य।

वह 'सब भूतों का परम मित्र है'। मित्र कल्याणकारक होता है, हितू होता है और सच्चा होता है। ऐसा जानकर ही तो उसका हुआ जाता है। ऐसा समझने पर ही तो उसमें आपा खो देने की मांग होती है। तभी समर्पण वास्तविक होता है। तभी प्रवेश स्वभावतः होता है और होती है शान्ति – परम शान्ति। जहाँ द्वैत नहीं रहता, जहाँ निम्न-प्रकृति नहीं, जहाँ प्रभु की अखण्ड मंगलमयी सत्ता है, वहाँ शान्ति न होगी तो कहाँ होगी?

इस श्लोक के साथ यह अध्याय समाप्त होता है। इसका सिंहावलोकन तो हमने ऊपर किया है। सांख्य-योगी किस प्रकार से कर्म करे और उसके लिए कर्म क्या महत्त्व रखता है, यह जानने से कर्म तथा ज्ञान का समन्वय कैसे हो सकता है, यह समझ में आ जाता है। सिद्धज्ञानी के लक्षण खूब खोलकर कहे हैं और आन्तरिक-साधना की चर्चा के साथ इस प्रसंग को समाप्त किया गया है।

अन्तिम श्लोक सारी चर्चा को ऊँचे दृष्टिकोण से दिखाकर दिशाभ्रम से साधक को बचाता है। वह किनारे को भूल न जाये, इसलिए।

इति श्रीमद्भगवद्गीता रूपी उपनिषद् में **'कर्मसंन्यासयोग'** नामक पांचवाँ अध्याय।

माँ सुमित्रा जी का जन्मोत्सव

प्रत्येक मास की 7 तारीख को माँ सुमित्रा की जन्मतिथि के उपलक्ष्य में साधना धाम हरिद्वार में अखण्ड जाप व प्रसाद वितरण किया जाता है।

दिनांक 7 दिसम्बर 2023 को इस उपलक्ष्य में 7 दिवसीय अखण्ड जाप आरम्भ किया गया जिसकी पूर्ति 14 दिसम्बर को उनके निर्वाण दिवस के अवसर 11 ब्राह्मणियों को भोजन तथा दक्षिणा के साथ की गई। इसके अतिरिक्त दिनांक 13 दिसम्बर को रामायण का अखण्ड जाप आरम्भ किया गया जिसकी पूर्ति 14 दिसम्बर को की गयी।

गुरु वाणी

सार्वजनिक कार्यकर्त्ता को विशेष कठिनाई का सामना करना पड़ता है, इसमें सन्देह नहीं। उसे अपने व्यवहार में निर्भय होना आवश्यक है। जो सार्वजनिक कार्यकर्त्ता दूसरों को अपनी पवित्रता का सबूत देने की सोचता है, सम्भव यही है कि वह बहुत दिन कार्यक्षेत्र में न डट सकेगा। यदि दुनियाँ की बातों से डर है और यह इच्छा है कि सभी आपको पवित्र करके जानें और कहें तो यह एक असम्भावना है। बापू पर भी लांछन लगाने वाले मिल जायेंगे। सबूत देने की चेष्टा अथवा इच्छा ही मेरी समझ में उल्टी बात है। जो अपनी नज़रों में साफ है उसे आगे बढ़ना है अपने कार्यक्षेत्र में। लोकापवाद से यदि वह अपने व्यवहार में कोई परिवर्तन आवश्यक समझे तो कर ले, परन्तु वह लोकहित के लिए ही। समाज सेवक को तो इस विषय में विशेष बलवान होना आवश्यक है। जो कार्यकर्त्ता अपने द्वेषकों को न केवल क्षमा ही कर सकता है उनसे बल्कि निरन्तर प्रीति तथा सेवा भी कर सकता है और अपने पथ पर डटा रहता है, अपने को निर्दोष सिद्ध करने का यत्न भी नहीं करता, उसका शोधन समय स्वयं कर देता है और वही द्वेषक प्रशंसक बन जाते हैं। यह अग्नि-परीक्षा है उसमें से गुज़रना होगा। (पत्र 70)

❖ ❖ ❖

जो पवित्रता के पथ पर अग्रसर हो रहा है, जिसका भीतर शनैः-शनैः शुद्ध होता चला जा रहा है, वह आत्म-ग्लानि की अग्नि कभी अपने भीतर प्रज्ज्वलित न करेगा और न किसी दूसरे में उसकी चिंगारी रोपेगा। व्यक्ति को जानना है कि उसमें न्यूनतायें हैं। उसे जानना है कि दूसरों में भी न्यूनतायें हैं, साथ ही उसे जानना है कि हम सब दिव्य पथ के पथिक हैं और किसी दिन वहाँ पहुँचेंगे। न उसे अपने से ग्लानि करनी है न दूसरों से। इस प्रगतिशील दृष्टिकोण को लेकर उसे विकास पथ पर स्वयं अग्रसर होना है और दूसरों को भी करना है। आत्मग्लानि एक संहारात्मक शक्ति है, व्यक्तित्व में वैषम्य उत्पन्न करती है। (पत्र 70)

❖ ❖ ❖

सार्वजनिक कार्यकर्ता को यह बात समझ लेनी होगी कि समाज में कमियाँ हैं। जो समाज से घृणा करता है वह अपना तथा समाज दोनों का अहित करता है। सेवा तभी सम्भव है जब दोषों के होने पर भी प्रीति हो। यदि वह दूसरों के दोषों को, अपनी झूठी निन्दा को सुनकर भी अपने हृदय को अलिप्त रख सकता है, तभी वह सफल सेवक बन पायेगा। (पत्र 70)

❖ ❖ ❖

Letters to Seekers

Letter No. 16 : Shri Ram : Chitai, Almora.
28.09.1944

My dear .....,

Yours of the 24th to hand.

The Navanha-parayana of the Ramayana was over the day before. Three Akhand Japs were held on consecutive days from 24th to 26th in the evening from 8 p.m. to 10 p.m. Days simply flew past. This is my first experience of a combined Navanha-parayana and it has proved a great success. The intensity of vibrations in the Japam on the third day was on the verge of unbearability. So you have already been reading the Ramayana a great deal. The mariyada purushottama aspect of Rama is indeed very nicely brought out by Tulsidas Ji, both as a man and as the Lord. Rama is painted in the highest possible colour and one feels no hesitation at all in taking him to be the Lord. That seems to be the highest conception to which the conscious mind can soar. That the man Ram is merely an (outward) projection of the Real, Parabrahma, Tulsi Das himself stated so often in the text. The anaanyabhava अनन्य भाव is so well delineated in the character of Bharat that I can not think of a parallel elsewhere.

अरथ न धरम न काम रुचि, गति न चहउँ निरबान।
जनम जनम रति राम पद, यह बरदानु न आन।।

and

जलदु जनम भरि सुरति बिसारउ, जाचत जलु पबि पाहन डारउ।
चातकु रटनि घटें घट जाई। बढ़ें प्रेमु सब भाँति भलाई।।

and truely

तुम सम रामहिं कोउ प्रिय नाहीं।।

This is real अव्यभिचारी भाव, the अनन्य भक्ति of which we hear in the Gita. It becomes much clearer when we read this charitra of Bharat in Ramayana.

Again in the same instance the humility of both Ram and Bharat, coupled with the reciprocal self samarpan of both the Bhakta and Bhagwan is so charming. Bharat dares express his desire, but in the same breath admits that 'thy will is paramount and be done'. In that lies the good of one and all.

If we approach this book with a view to find faults, there are many, for there is many a spot where mythology is interwoven within the story and the current sayings of the people have been given undue sanction, as ढोल गंवार शूद्र पशु नारी etc. But even in mythology the nobility of character is so well painted in Sati Charitra (सती)

जन्म कोटि लगि रगर हमारी। बरउँ संभु न त रहउँ कुआरी।।

There was a time when I did not like the text, but at present I feel, with all the shortcomings there is not another text in Hindi which will equal the Ramayana from the point of view of an aspirant.

I am shortly leaving for the Pindari Glacier. It will mean a little break in our correspondence but not just now. You will do well to write c/o Pt. Shri Niwas Joshi, Talla Dania, Almora and

he shall manage. Kindly do not be impatient, if there is delay.

We may be holding another Akhand Jap on the 1st of October. Do you observe any restrictions about food during the Japam? We generally take vegetables, milk and fruit during the day. The two hourly terms system has proved most useful. The smaller and the less disturbed the room, the greater the effect of the vibrations for there is a greater degree of 'saturation' of the atmosphere. You have held so many Akhand Japs; does any one perceive the intensity of vibrations in the Akhand Japa or any other effect?

Yours in the Lord,
Ramanand

❖ ❖ ❖

Letter No. 17 : Shri Ram : Loharkhet, Distt. Almora.
05.10.1944

My dear .....,

I take this opportunity of remembering you today, sitting at a place about fifty miles N.E. of Almora on the way to the Pindari Glacier. As I am writing the roar of the hill ravine is filling my ears, and it is so very quiet and clam otherwise.

We are to learn to look upon life and all its events dispassionately. The more one is able to do it the more rapidly he can change himself and the less miserable his life becomes for himself and his associates. After all, the centre of consciousness (individual) lies beyond all that is perceivable within and without, and it should not be so difficult to establish oneself there temporarily if not permanently. To acquire that attitude one is to attempt. Let the name be hummed within you when you mean to assume the attitude or let it run deeply within you. This will at once lift the consciousness to the superconscious regions from where you can survey dispassionately. Look upon the misdeeds of others, as well as your own, from those Himalayan heights i.e. stand apart and watch. Such an attitude will take the wind out of the sails of anger and sex-instinct. You will be in tune with the Lord and His Grace will hold you firm as a rock in the tempest. Such is the power of His name, and such the power of His Grace. Deem it not impossible. This you can easily realise within yourself.

We are to learn to lean upon Him in difficulty. Let Him be our constant companion. We can hear His voice in the calmest moments within ourselves. His advice is for our ultimate good (not immediate always). Have faith and act. The more we follow it, the clearer and stronger becomes that guidance. It is in many aspirants an urge from within which has nothing to do with reason.

I shall be back from the Glacier before the Mahalakshmi. My address upto the 25th October will be the permanent one. Thereafter I shall be leaving the hills.

Hope all of you there are well. Munnie is also making good progress, I hope.

Very likely your reply is already on its way to me.

Yours in the Lord,
Ramanand

भागवत के मोती

गत वर्ष के अप्रैल अंक से पत्रिका में श्रीमद्भागवत के चुने हुए सन्देश छपने आरम्भ हुए हैं। इस अंक में प्रस्तुत है इन सन्देशों की चौथी कड़ी –

16. जिसका अज्ञान निवृत्त नहीं हुआ है, जिसकी इन्द्रियाँ वश में नहीं हैं, वह यदि मनमाने ढंग से वेदोक्त कर्मों का परित्याग कर देता है तो वह विहित कर्मों का आचरण न करने के कारण विकर्म रूप अधर्म ही करता है। इसलिये वह मृत्यु के बाद फिर मृत्यु को प्राप्त होता है।

(भागवत 11.3.45)

17. धन का एकमात्र फल है धर्म; क्योंकि धर्म से ही परम तत्व का ज्ञान और उसकी निष्ठा – अपरोक्ष अनुभूति सिद्ध होती है, और निष्ठा में ही परम शान्ति है। परन्तु यह कितने खेद की बात है कि लोग उस धन का उपयोग घर-गृहस्थी के स्वार्थों में या काम भोग में ही करते हैं और यह नहीं देखते कि हमारा यह शरीर मृत्यु का शिकार है और वह मृत्यु किसी प्रकार भी टाली नहीं जा सकती।

(भागवत 11.5.12)

18. यह शरीर मृतक-शरीर है। इसके सम्बन्धी भी इसके साथ ही छूट जाते हैं। जो लोग इस शरीर से तो प्रेम की गाँठ बाँध लेते हैं और दूसरे शरीरों में रहने वाले अपने ही आत्मा एवं सर्वशक्तिमान भगवान से द्वेष करते हैं, उन मूर्खों का अध:पतन निश्चित है।

(भागवत 11.5.15)

19. कलियुग में केवल संकीर्तन से ही सारे स्वार्थ और परमार्थ बन जाते हैं। इसलिये इस युग का गुण जानने वाले सारग्राही श्रेष्ठ पुरुष कलियुग की बड़ी प्रशंसा करते हैं, इससे बड़ा प्रेम करते हैं। देहाभिमानी जीव संसार-चक्र में अनादि काल से भटक रहे हैं। उनके लिए भगवान् की लीला, गुण और नाम के कीर्तन से बढ़कर और कोई परम लाभ नहीं है; क्योंकि इससे संसार में भटकना मिट जाता है और परम शान्ति का अनुभव होता है।

(भागवत 11.5.37,38)

20. जो मनुष्य 'यह करना बाकी है, वह करना आवश्यक है' – इत्यादि कर्म-वासनाओं का अथवा भेदबुद्धि का परित्याग करके सर्वात्म-भाव से शरणागत वत्सल, प्रेम के वरदानी भगवान मुकुन्द की शरण में आ गया है, वह देवताओं, ऋषियों, पितरों, प्राणियों, कुटुम्बियों और अतिथियों के ऋण से उऋण हो जाता है, वह किसी के अधीन, किसी का सेवक, किसी के बन्धन में नहीं रहता।

(भागवत 11.5.41)

गुरुदेव श्री स्वामी रामानन्द जी का जन्मोत्सव

गुरुदेव महाराज का जन्मोत्सव दिनांक 16 दिसम्बर 2023 को विभिन्न केन्द्रों पर धूमधाम से मनाया गया जिनका विवरण नीचे दिया जा रहा है –

1. साधना धाम हरिद्वार – साधना धाम हरिद्वार में प्रात: 10:00 बजे से 12:00 बजे तक साधना धाम के प्रांगण में विधिवत हवन किया गया जिसमें लगभग 120 साधक उपस्थित रहे। तदोपरान्त 11 ब्राह्मणों को भोजन कराके दक्षिणा दी गई।

दोपहर 2:00 से 4:00 बजे तक केक काटकर भजनों के साथ जन्मोत्सव मनाया गया। सायं 6:00 से 9:00 बजे तक भजन सन्ध्या का आयोजन किया गया जिसमें प्रसिद्ध भजन गायक श्री शंकर मस्ताना की भजन मण्डली ने लगभग 100 श्रोताओं को लगातार तीन घण्टे तक मन्त्रमुग्ध कर के रख दिया। श्रोताओं में साधकों के अतिरिक्त गणमान्य विशिष्ट अतिथियों को भी आमन्त्रित किया गया था।

तत्पश्चात सभी साधकों व अतिथियों ने प्रीतिभोज का आनन्द उठाया। प्रीतिभोज में 200 लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। जो आगन्तुक 17 या 18 को जाने वाले थे उनको मार्ग का भोजन देकर विदा किया गया।

साधना धाम के मन्दिर को फूलों से सजाया गया तथा प्रांगण की सजावट रंग-बिरंगी लाइटों से की गई।

इस प्रकार साधना धाम हरिद्वार में गुरुदेव का जन्म दिवस खूब धूमधाम से मनाया गया।

जन्म दिवस के अवसर पर हरिद्वार में आयोजित शिविर में 66 साधकों ने भाग लिया।

2. स्वामी रामानन्द तपस्थली दिगोली – दिनांक 16 दिसम्बर 2023 को पहली बार तपस्थली दिगोली में जन्मोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें बीसलपुर, हरिद्वार, अहमदाबाद व कानपुर आदि से आकर लगभग 20-22 साधकों ने भाग लिया। प्रात:काल में सुन्दर काण्ड का पाठ किया गया, दोपहर दो बजे केक काटकर व भजन गाकर जन्मोत्सव मनाया गया।

भवन को लाइटों से तथा साधना मन्दिर को फूलों से सजाया गया।

दोपहर में स्थानीय लोगों को आमन्त्रित करके भण्डारा किया गया जिसमें लगभग 70 लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया।

इस प्रकार दिगोली में जन्मोत्सव मनाया गया।

3. अहमदाबाद – अहमदाबाद केन्द्र में लगभग 100 साधकों ने श्रद्धापूर्वक भोग अर्पित करके भण्डारे का आयोजन किया तथा दोपहर 2:00 बजे श्री रामजन्म का छन्द - **भये प्रकट कृपाला दीनदयाला** व अन्य भजन गाकर जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

4. कानपुर – कानपुर के दबोली, कृष्णा नगर, लाल बंगला, राम बाग, यशोदा नगर, स्वरूप नगर, शत्रुघ्न पार्क तथा रावतपुर सभी केन्द्रों में पूज्य गुरुदेव महाराज का जन्मोत्सव विधिवत मनाया गया।

5. बरेली – बरेली में माननीय अध्यक्ष जी की प्रेरणा से जयनारायण इंटर कॉलेज विद्या मन्दिर में गुरु महाराज का जन्मोत्सव प्रधानाचार्य डॉ. रविशरण चौहान जी अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें लगभग 1500 छात्रों ने भाग लिया। इसमें सुन्दरकाण्ड का पाठ, माल्यार्पण तथा प्रसाद वितरण किया गया जिसका सारा व्यय कॉलेज के प्राचार्य गणों द्वारा वहन किया गया।

6. बीसलपुर – माननीय अध्यक्ष जी के तत्त्वाधान में सरस्वती विद्या मन्दिर बीसलपुर में पूज्य गुरुदेव का जन्मोत्सव समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। यहाँ श्रद्धेय प्रधानाचार्य श्री वीरेन्द्र मिश्र जी की अध्यक्षता में 70 आचार्य गण व 1500 छात्र छात्राओं ने मिलकर गुरु पूजन, माल्यार्पण तथा प्रसाद वितरण करके समारोह को सम्पन्न किया।

पूज्य साहू काशीनाथ जी के श्री गुरु महाराज के साथ अनुभव

षष्ठम भाग

पत्रिका के गतांक में साहू काशीनाथ जी से प्राप्त जानकारी के आधार पर श्री गुरु महाराज के जीवन की पाँच घटनाओं पर प्रकाश डाला गया था। इस अंक में प्रस्तुत हैं कुछ अन्य घटनाएँ जो साहू काशीनाथ जी के सान्निध्य से साधक भाई अनिल चन्द्र मित्तल जी के स्मृति पटल पर आज भी अंकित हैं –

6. घटना सन् 1950 की रही होगी जब आदरणीय साहू जी के पुत्र व श्री अनिल चन्द्र जी के अग्रज श्री कृष्ण चन्द्र मित्तल नैनीताल हॉस्टल में रहकर पढ़ाई कर रहे थे। एक बार जब पूज्य गुरुदेव नैनीताल में पूज्य गंगा माँ जी के घर पर आये हुए थे, उन्ही दिनों में संयोगवश समस्त उत्तर भारत में प्रसिद्ध महान सन्त नीम करोली बाबा (बाबाजी) भी नैनीताल आये हुए थे। उनके आगमन का पूरे शहर में शोर था; दूर-दूर से श्रद्धालु लोग उनके दर्शनों के लिये उमड़ रहे थे। पूज्य साहू जी भी उनके दर्शन हेतु नैनीताल पधारे। वहाँ जाकर सोचा कि क्यों न गुरुदेव को भी उनके दर्शन करा दिये जायें। इसी आशय से पूज्य साहू जी अपने पुत्र कृष्ण चन्द्र को साथ लेकर गुरुदेव के पास गये और उनके आग्रह पर गुरुदेव बाबाजी के दर्शन हेतु चल पड़े। दर्शन के स्थान पर जाकर देखा तो हजारों की संख्या में लोग उन्हें घेरे हुए थे और बाबाजी के दूर-दूर तक दर्शन नहीं हो रहे थे क्योंकि बाबाजी काफी अन्दर मैदान के अन्त में एक कमरे में विराजमान थे। लगता था कि आज तो दर्शन हो नहीं पायेंगे। गुरुदेव शान्त खड़े थे। कुछ ही समय पश्चात बाबाजी के दो सेवक भीड़ को चीरते हुए गुरुदेव के पास आकर बोले कि बाबाजी आप को बुला रहे हैं। भीड़ में से रास्ता बनाते हुए वे सेवक पूज्य गुरुदेव को बाबाजी के पास ले गये। बाबाजी ने तुरन्त गुरुदेव को अपने पास तख़्त पर बैठा लिया और लोगों से कहा कि ये बहुत बड़े सन्त हैं, इनकी आरती करो। बाबाजी की आज्ञा का पालन हुआ और भक्तजनों ने आरती का थाल सजाकर दोनों की आरती की। पूज्य साहूजी और कृष्ण चन्द्र जी ने भी बाबाजी के चरण छू कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके बाद बाबाजी ने खड़े होकर गुरुदेव को विदा किया और बाबाजी के सेवकों ने सहायता करके तीनों को भीड़ से बाहर निकाला।

ऐसी विलक्षण प्रतिभा थी पूज्य गुरुदेव की, फिर भी पूर्णत: अहंकार रहित होकर साधारण मनुष्यों की भाँति समाज में विचरण करते थे।

7. एक और घटना पूज्य साहू जी से पता लगी थी। एक भक्त गुरुदेव के पास आया। उसने बताया कि कई बार उसका सिर भारी हो जाता है और ऐसा लगता है जैसे उसके भीतर दो तीन आत्माएँ प्रवेश कर गई हैं। आपके बारे में सुनकर आपके पास इस आशा से आया हूँ कि आप ही मेरा संकट दूर कर सकते हैं। गुरुदेव ने कहा कि भाई मेरे पास तो केवल राम नाम की औषधि है, तुम भी नाम जप किया करो। उसने कहा कि मैं अपनी मर्ज़ी से कुछ भी नहीं कर

सकता हूँ। गुरुदेव ने एक कागज़ की पर्ची पर तीन बार राम नाम लिखकर दिया और अपनी दाहिनी बाज़ू पर बाँधने के लिये कहा। अगले दिन उस व्यक्ति ने रात का अनुभव बताते हुए कहा कि आत्माओं ने बहुत उत्पात मचाया और पर्ची खोलकर हवा में उड़ा दी। अगले दिन गुरुदेव ने पाँच बार राम लिखकर दिया और उसके अगले दिन सात बार। इस बार उस व्यक्ति को अनुभव हुआ कि उसको पूरी तरह उन आत्माओं से मुक्ति मिल गई है और वह गुरु महाराज के चरणों में लोट गया। गुरुदेव ने उसको राम नाम का जाप करने की सलाह दी।

ऐसे संकट मोचन थे हमारे गुरुदेव।

8. यह घटना साहू काशीनाथ जी की बहन श्रीमती राज कुमारी जी से सम्बन्धित है जो विवाह के बाद जल्दी ही विधवा हो गई थीं। उसके बाद पूज्य साहू जी उन्हें अपने घर ले आये थे और जीवन पर्यन्त वह अपने मायके में ही रहीं। राज कुमारी जी की प्रबल इच्छा थी कि एक बार अपने मृत पति की आत्मा से बात करूँ और इसके कारण वह बहुत व्यथित रहती थीं। एक बार एक व्यक्ति आया जिसे तान्त्रिक भी कह सकते हैं। उसके पास तीन पायों वाली एक छोटी चौकी थी जिसको प्लेनचिट कहा जाता था। उसका दावा था कि किसी मृत व्यक्ति की आत्मा का आवाहन वह उस प्लेनचिट के द्वारा कर सकता था बशर्ते कि उस आत्मा का पुनर्जन्म न हुआ हो और वह आत्मा आने को तैयार भी हो। घर वालों के अनुरोध पर उसने राज कुमारी जी के पति श्री पूरन चन्द जी की आत्मा का आवाहन कर के उसको बुला लिया और राज कुमारी जी उनसे जो वार्तालाप करना चाहती थी वह भी हो गई। अब जब उस आत्मा को विदाई देने लगे तो वह वापस जाने को तैयार नहीं हुई और कहने लगी कि अब वह राज कुमारी जी के साथ ही रहेगी। तान्त्रिक तो चला गया परन्तु राज कुमारी जी का सिर भारी हो गया और उनकी आवाज़ भी पुरुषों वाली हो गई जैसे उनमें पूरन चन्द जी की आत्मा प्रवेश कर गई हो। अब तो सब लोग बहुत घबरा गये और गुरु जी को याद करने लगे, परन्तु गुरु जी दूर के किसी शहर में थे और उन तक तुरन्त समाचार भेजने का कोई साधन भी उपलब्ध नहीं था, जिसके कारण उनका आना 8-10 दिन से कम में सम्भव नहीं था। इधर राज कुमारी जी की हालत चिन्ताजनक हो गई, उनका खाना पीना सब छूट गया।

अब पूज्य साहू जी ने सोचा कि क्यों न गुरु जी द्वारा प्रयोग में लाया गया प्रेतबाधा भगाने वाला राम नाम की पर्ची वाला उपाय आज़माया जाये। ये सोच कर उन्होंने 7 बार राम लिख कर पर्चा राज कुमारी जी के हाथ पर बाँध दिया। थोड़ी देर बाद उस आत्मा की राज कुमारी जी से कुछ कहासुनी हुई और आवाज़ आई कि 'देखता हूँ इस घर से मुझे कौन निकालता है। तुम्हें तो छोड़ता हूँ पर रहूँगा यहीं पर।' उसके बाद राज कुमारी जी तो सामान्य हो गईं परन्तु साहू जी का सिर भारी हो गया और उन्हें लगा जैसे कोई उन पर सवार हो गया है। वह बहुत बेचैन रहने लगे, खाना पीना सब बन्द हो गया। यह समस्या गुरु जी के आगमन तक लगभग 7-8 दिन तक चली।

इस बीच पूज्य साहू जी बहुत कमज़ोर भी हो गये थे। परम पूज्य गुरुदेव महाराज के आते ही सबने उनको पूरा किस्सा सुनाया। उन्होंने

तुरन्त साहू जी को एकान्त में बैठाया और उनके सिर पर हाथ रख दिया। हाथ रखने के कुछ ही क्षणों के बाद आदरणीय साहू जी मानसिक रूप से सामान्य अवस्था में आ गये, अब केवल कमज़ोरी रह गई थी। इसके बाद पूज्य गुरुदेव ने आदरणीय साहू जी को बहुत डाँटा और कहा कि भविष्य में भूल से भी ऐसा कुछ नहीं करना, न तो आत्मा को बुलवाना और न उसके निवारण के लिये मेरा किया उपाय करना। उन्होंने बताया कि ऐसा करने से बहुत नुकसान हो सकता था, यहाँ तक कि मृत्यु भी हो सकती थी। आदरणीय साहू जी ने पूज्य गुरुदेव की चरणों पर गिर कर अपनी गलती के लिये क्षमा माँगी।

ऐसे थे परम दयालु, पूर्ण ब्रह्म शक्ति सम्पन्न हमारे पूज्य गुरुदेव भगवान।

9. यह घटना कानपुर की है। बड़ी ही विचित्र घटना है। इस घटना से यह विदित होता है कि पूज्य गुरुदेव, अपने शिष्यों के लिये जो उनके लिये समर्पित हैं और उनके कोटे में हैं, किस हद तक जाकर उनका उद्धार करते थे। कानपुर में गुरुदेव अपने शिष्य श्री धर्मवीर विग साहब के यहाँ ठहरे हुए थे। प्रवास के अगले दिन उन्होंने विग साहब से, उस क्षेत्र के किसी ग्राम का नाम बता कर, पूछा कि इस ग्राम में जाने के लिये कोई साधन मिल सकता है क्या? विग साहब ने बताया की उस ग्राम का रास्ता तो बिलकुल ऊबड़ खाबड़ है। वहाँ जाने के लिये न तो कोई बस सर्विस है और न ही जीप द्वारा जाना सम्भव है। बहुत पूछताछ करने पर एक ऐसी मोटर साइकिल की व्यवस्था हो पाई जिसकी पिछली सीट नहीं थी। पूज्य गुरुदेव आग्रह करके मडगार्ड पर ही कपड़ा बिछाकर बैठ गये और बहुत असुविधा के बावजूद किसी तरह सन्तुलन बनाकर बैठे रहे और अपने उस जिज्ञासु साधक के घर पहुँच ही गये जहाँ वह जाना चाहते थे। वह साधक गुरुदेव को देखकर भाव विह्वल होकर उनके चरणों में लोट गया। गुरुदेव ने उसे उठाकर गले से लगा लिया और बोले कि मैंने वादा किया था कि तुमसे मिलूँगा और अपनाऊँगा भी। कुछ घंटों के प्रवास में उसके साथ बैठे, फलाहार किया और उसको दीक्षा दी। फिर उसी मोटर साइकिल पर बैठकर वापिस आ गये। वापिस पहुँचने पर देखा गया कि त्वचा छिल जाने के कारण उनका चोला कई जगह से खून से रँगा हुआ था।

कितने महान थे गुरुदेव जो सच्चे साधक के घर इस प्रकार पधारे जैसे त्रेता युग में भगवान राम शबरी के घर पधारे थे। कहते हैं – प्यास लगने पर प्यासा स्वयं चलकर कुएँ के पास जाता है, पर यहाँ तो गुरुदेव ने इस कहावत को ही उलट दिया।

10. अगली घटना भी सम्भवतः कानपुर की ही है। गुरुदेव किसी साधक के घर ठहरे हुए थे। इसी बीच किसी अन्य साधक ने गुरुदेव को दोपहर के भोजन पर आमन्त्रित किया जिसमें वहाँ के अन्य अच्छे-अच्छे सन्त भी आमन्त्रित थे। मई जून की भयंकर गर्मी थी। उन दिनों बिजली के पंखों की व्यवस्था उपलब्ध नहीं होती थी। भोजन करने में काफी असुविधा हो रही थी। किसी सन्त ने कह दिया कि थोड़ी सी वर्षा हो जाती तो भोजन का आनन्द आ जाता। गुरुदेव महाराज चुप रहे। थोड़ी ही देर में पता नहीं कहाँ से एक बदली आई और केवल उसी स्थान पर बरस कर चली गई जिससे गर्मी की भयंकरता से राहत मिल गई। यह देखकर सब आश्चर्यचकित

हो गये और कहने लगे कि आप तो धन्य हैं जिनके कहने मात्र से ही अनपेक्षित वर्षा हो गई।

भोजन समाप्त होने के बाद जब हाथ धोने के लिये सब सन्त उठे तब पूज्य गुरुदेव ने अकेले में देखकर उन सन्त महोदय से धीरे से कहा कि इतनी छोटी-छोटी बातों में शक्ति केन्द्रित करके उसका अपव्यय न किया करें जिसके द्वारा समाज का बहुत कल्याण हो सकता है। वे सन्त जो अभी तक गर्व से चूर थे, अब उस शक्ति के दुरुपयोग की निरर्थकता महसूस करने लगे।

ऐसे तत्त्वदर्शी थे हमारे गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी महाराज।

11. बद्रीनाथ के सन्त समागम में पूज्य गुरुदेव – एक बार पूज्य गुरुदेव अपने 2-3 शिष्यों के साथ बद्रीनाथ धाम की यात्रा पर गये हुए थे। उस समय बद्रीनाथ यात्रा काफी दुर्गम थी। उनके वहाँ प्रवास के दौरान ज्ञात हुआ कि कोई अखिल भारतीय सन्त समागम का आयोजन बद्रीनाथ में होने वाला है जिसमें पूरे भारत से बड़े-बड़े सन्त एवं उच्च कोटि के विरक्त सन्त पहुँचने वाले हैं। नियत समय पर बहुत व्यवस्थाओं के साथ समागम का आयोजन हुआ। पूज्य गुरुदेव ने अपने शिष्यों से कहा चलो पीछे कहीं बैठकर बड़े सन्तों की वाणी का श्रवण करते हैं। ऐसा अवसर बड़े सौभाग्य से मिलता है। यह कहकर पूज्य गुरुदेव अपने शिष्यों के साथ पीछे एक कोने में बैठ गये।

सम्मेलन आरम्भ हुआ। मंच पर कुछ बड़े वयोवृद्ध सन्त और संन्यासी अपनी-अपनी वरिष्ठता के हिसाब से स्वयं को मंच की अध्यक्षता के लिये प्रस्तुत कर रहे थे, पर तय नहीं हो पाने के कारण आपस में कुछ विवाद की सी स्थिति बन गई थी। इतने में किसी सन्त की नज़र पीछे कोने में बैठे पूज्य गुरुदेव पर चली गई। वे तुरन्त मंच से उठकर तेज़ी से पूज्य गुरुदेव के पास आकर बोले कि हमें तो मालूम ही नहीं था कि आप यहाँ उपस्थित हैं। अब तो आप के अतिरिक्त किसी अन्य की अध्यक्षता का प्रश्न ही नहीं है। वे सन्त बड़े आदर के साथ, पूज्य गुरुदेव के बहुत मना करने पर भी बहुत आग्रह करके मंच पर ले गये और सीधे अध्यक्ष की कुर्सी पर आसीन कर दिया। कहा जाता है कि 'उच्च कोटि के सन्त देख कर ही दूसरे सन्त की आध्यात्मिक ऊँचाई को जान जाते हैं।' यहाँ भी यही हुआ। पूज्य गुरुदेव को देखकर मंच पर बैठे सभी सन्त एक मत से पूज्य गुरुदेव को अध्यक्ष स्वीकार करने में सहमत हो गये। उस सन्त समागम में पूज्य गुरुदेव सम्भवतः सबसे काम आयु के संन्यासी थे।

उपरोक्त वृत्तान्त पूज्य गुरुदेव ने स्वयं एक गोष्ठी में बहुत हँस-हँस कर बताया था कि मुझ बालक को उन महान सन्तों ने बलात् ले जाकर बैठा दिया और मैंने भी इसको प्रभु की लीला समझ कर स्वीकार कर लिया। इस घटना से पूज्य गुरुदेव की आध्यात्मिक स्थिति का परिचय मिलता है।

ऐसे सरल, सौम्य, विलक्षण व्यक्तित्त्व के चरणों में शत-शत नमन करते हुए गुरुदेव से सम्बन्ध रखने वाली घटनाओं की शृंखला की इतिश्री की जाती है।

❖ ❖ ❖

जीवन लक्ष्य

जैसा हम जानते हैं, संसार के वैभव धन-धान्य, पुत्र-वनिता जीवन का उद्देश्य नहीं हो सकता। यह सब जड़ प्रकृति के आश्रित हैं। जड़ प्रकृति के क्षणभंगुर विविध रूपान्तर हैं जो अशाश्वत हैं, क्षणिक हैं। इनसे शाश्वत सुख की प्राप्ति की सम्भावना क्या? कारण का कार्य उसी के अनुसार होता है। लोहे से स्वर्ण-आभूषण नहीं बनता। प्रकृति की गतिशीलता में स्थायित्व की सम्भावना कदापि सम्भव नहीं। इसमें एकरसता नहीं हो सकती। अविनाशी तत्व भौतिकता में प्राप्त नहीं हो सकता। नाशवान को अन्तिम लक्ष्य मान लेना भी सारगर्भित अनुकरण नहीं। अतः निश्चयात्मक हमारा लक्ष्य कोई दूसरा होगा।

साधना का उद्देश्य एकमात्र भगवद् प्राप्ति है। अविनाशी तत्व का एक समावेश है अपने में। अन्तर्निहित को प्रकृति की जगमगाहट के आवरण से निरावरण करना और सत्यम् शिवम् सुन्दरम् को पूर्णतया बाह्य अभिव्यक्ति में लाना है। सच्चिदानन्द को अनुभूति में लाना है। दूसरे शब्दों में उस परम तत्व से ऐक्य प्राप्त करना है जो इस जड़ तथा चैतन्य सत्ता का आदि स्रोत है। जो अव्यक्त जिससे यह सारी अभिव्यक्ति है और जहाँ से व्यक्त होकर जिसमें यह सब समा जाता है उसी सत्य तत्व का पूर्ण आकलन करना है अपने सम्पूर्ण में। हमें प्रेम शक्ति आनन्द में निवास करना है। इसे क्षण-क्षण के विलास में व्यक्त करना है। सीमित चेतना को असीम में रूपान्तरित करके अणु से महान की ओर, जड़ से चेतन की ओर, विक्षोभ से शान्ति की ओर चलना है। शनै-शनै साधन सम्पन्न होते हुए गहनता में प्रवेश पाना है। सम्पूर्ण आशाओं को समाप्त कर सम्पूर्ण आधारों को त्याग कर सम्पूर्ण कर्मों को महान कर्म का रूप देकर सम्पूर्ण जीवन को समर्पित करना है। जिसकी यह देन है उसी के हाथों में अर्पित कर देना है सदा-सदा के लिये।

क्या संसार के कार्य कलाप निरुद्ध करने होंगे? क्या प्रकृति की देन जड़ पदार्थों के भोग छोड़ने होंगे? क्या सांसारिक नाते तोड़ कर कहीं परे जाकर संसार बसाना होगा?

नहीं कदापि नहीं। प्रत्युत इन्हीं क्रियाओं को भगवद् भक्ति का ज़ामा पहना देना होगा। सम्पूर्ण कर्मों को भगवद् कर्म बना देना होगा। हमारा सब कुछ साधना द्वारा साध्य प्राप्ति के लिये हो – खाते-पीते, उठते-बैठते, लेते-देते, जागते-सोते दिव्य मिलन की दिव्य धारा से ओत प्रोत हो। मोह की प्रेम आसक्ति को सेवा में, अपनत्व को उसमें, जीवन की जागृति में, अहं को तवं में, संसार को ब्रह्म में, प्रकृति को पुरुषोत्तम में परिवर्तित कर देना होगा। इस सम्पूर्ण योग की साधना द्वारा अपने को केवल बदल डालना होगा। स्वयं सांसारिकता पल-पल में तुम्हें धकेल रही है इस ओर। तू छोड़े न छोड़े यह परिणामी संसार स्वयं तुझे छोड़े जा रहा है। तू मांगे न मांगे वह इस परिणाम की अनुभूति लिये पग-पग पर तेरापन दर्शन कर रहा है। जाना ही होगा उधर, समझना ही होगा – इस संकेत को एक दिन, और लक्ष्य को जानना ही होगा अन्ततोगत्वा।

– सुमित्रा माँ

जैसी पढ़ाई वैसी कमाई

एक लोकोक्ति है – **'जैसी पढ़ाई वैसी कमाई'** अर्थात् जिस प्रकार की शिक्षा होगी अथवा जिस क्षेत्र में विद्या या निपुणता प्राप्त करोगे उसी के अनुसार धन कमाओगे। यदि व्यापार में निपुणता प्राप्त की है तो व्यापार से ही धन कमा पाओगे, वकालत पढ़ी है तो मुकद्दमे लड़कर, डाक्टरी पढ़ी है तो रोगियों की चिकित्सा करके, जेब काटने की विद्या प्राप्त की है या तस्करी सीखी है तो उसी प्रकार के कार्यों से धन कमाओगे। इसका एक अर्थ यह भी है कि जितनी पढ़ाई उतनी कमाई। अर्थात् कुछ लोग कक्षा 5 तक की पढ़ाई कर पाते हैं और किसी कार्य में कुशलता भी प्राप्त नहीं करते तो उन्हें कम आमदनी में जीवन भर गुज़ारा करना पड़ता है। इसके विपरीत जो लोग अधिक पढ़ाई करके डिग्रियाँ प्राप्त करते हैं अथवा किसी कार्य में दक्षता प्राप्त कर लेते हैं और अधिक धन कमा लेते हैं तो वे अच्छा जीवन यापन कर लेते हैं।

इस प्रकार धन कमाने की अनगिनत विद्याएँ हैं, इनमें से किसी को भी अपनी इच्छानुसार अपनाकर व्यक्ति अपना जीवन निर्वाह कर सकता है, परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि व्यक्ति कितनी भी विद्या प्राप्त कर ले, कितनी भी उपाधियाँ एकत्रित कर ले, कितना भी धन, वैभव, नाम, प्रसिद्धि प्राप्त कर ले, इनमें से कोई भी कमाई मरने के बाद साथ नहीं जाती। हाँ, एक पढ़ाई ऐसी भी है जिसकी कमाई इस जीवन में भी काम आती है और मरने के बाद साथ भी जाती है, और वह है आध्यात्मिक पढ़ाई। आध्यात्मिक ज्ञान के विद्यार्थी को इस जीवन की आवश्यकताएँ पूरी करने में तो कभी कठिनाई आती ही नहीं है, उसका अगला जीवन भी इस पढ़ाई से सुधर जाता है क्योंकि आध्यात्मिक ज्ञान का धनी व्यक्ति जीवन भर सात्त्विक कार्य करेगा और अन्त समय में भी उसकी वैसी ही भावना होगी जिस के बल पर पर वह या तो भगवान् के लोक में जायेगा या पुण्यवान लोगों के घर में जन्म लेगा जिसमें उसे आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ने का अवसर फिर से प्राप्त होगा। अतः आध्यात्मिक पढ़ाई ही एकमात्र ऐसी पढ़ाई है जो अधिकतम लाभदायक है।

इसलिए हमें चाहिए कि पढ़ाई के समुचित विषय का चयन करें और पढ़ाई पूरी होने के बाद भी स्वाध्याय तो जीवन भर करते ही रहें। स्वाध्याय का अर्थ है स्वयं पढ़ना या स्वयं को पढ़ना। स्वयं पढ़ना है तो ऐसा साहित्य पढ़ें जिससे ईश्वरीय ज्ञान में वृद्धि हो, और स्वयं को पढ़ने का अर्थ है स्वयं को पहचानना, आत्मचिन्तन करना। दोनों ही प्रकार का स्वाध्याय मनुष्य का कल्याण करने वाला है।

संशोधन

'हमारी साधना' पत्रिका के अक्तूबर-दिसम्बर 2023 अंक के पृष्ठ संख्या 39 पर छपी दानदाताओं की सूची में क्रम संख्या 7 पर अजय अग्रवाल पुत्र स्व. सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल में स्व. के स्थान पर श्री पढ़ा जाये। तथा क्रम संख्या 8 पर निवि गर्ग पुत्र सुरेन्द्र कुमार में पुत्र के स्थान पर पुत्रवधू पढ़ा जाये।

अशुद्धियों के लिए सम्पादक मण्डल क्षमा प्रार्थी है।

श्रद्धा एवं शास्त्रविधि

गीता के 16वें अध्याय में भगवान् ने दैवी सम्पदा एवं आसुरी सम्पदा के लक्षणों का वर्णन करते हुए बताया है कि दैवी सम्पदा मुक्ति के लिये और आसुरी सम्पदा बाँधने के लिये मानी गई है तथा आसुरी सम्पदा को धारण करने वाले व्यक्तियों को बार-बार आसुरी योनियों में जन्म लेना पड़ता है। इस अध्याय के अन्त में भगवान् ने बताया है कि मनुष्य को शास्त्रविधि से कार्य करने चाहिए न कि मनमाने ढंग से।

इस सन्दर्भ में 17वें अध्याय के आरम्भ में अर्जुन का यह प्रश्न प्रासंगिक है कि जो मनुष्य शास्त्रविधि को त्यागकर श्रद्धा से युक्त हुए देवादि का पूजन करते हैं उनकी क्या स्थिति है?

यहाँ भगवान् एक महत्वपूर्ण घोषणा करते हैं कि शास्त्रविधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करने वाला व्यक्ति न तो सिद्धि को प्राप्त होता है, न परम गति को और न सुख को। इतना ही नहीं, भगवान् ने तो यहाँ तक कह दिया कि शास्त्रविधि से रहित तो तप भी निन्दनीय है क्योंकि ऐसा तप करने वाले व्यक्ति अपना और समाज का अहित ही करते हैं। पुराणों की कथाओं से पता लगता है कि रावण, कुम्भकरण, मेघनाद, हिरण्यकशिपु आदि अनेकों राक्षसों ने इस प्रकार का तप करके अहंकारयुक्त होकर अपनी शक्ति और समय का दुरुपयोग ही किया है और समाज को इतनी पीड़ा पहुँचाई है कि उनसे निज़ात पाने के लिये भगवान् को अवतार धारण करना पड़ा।

इसलिये भगवान् ने आज्ञा दी है कि जो भी कार्य करें शास्त्रों के अनुसार करें। जहाँ तक तप का प्रश्न है, भगवान् ने घोर तप करने के स्थान पर ऐसे तप की अनुशंसा की है जो कोई भी व्यक्ति कहीं भी रहकर कर सकता है। अपने शरीर द्वारा गुरुजनों व ज्ञानीजनों का पूजन, पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा का पालन, वाणी द्वारा प्रिय और हितकारक भाषण, वेद शास्त्रों का पठन, नाम जप का अभ्यास और मन का निग्रह, शान्तभाव, अन्तःकरण की पवित्रता – ये सभी आचरण तप की श्रेणी में आते हैं। किन्तु यह तप तभी सार्थक (सात्त्विक) होता है जब फल की इच्छा न रखते हुए परम श्रद्धा से युक्त होकर किया जाये अन्यथा यह राजसिक या तामसिक भी हो सकता है, अनिष्टकारक भी हो सकता है जैसा ऊपर बताया गया है। 17वें अध्याय के 5वें श्लोक में कहा गया है –

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः।
दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः॥

इसी प्रकार दान भी तभी सार्थक होता है जब वह कर्तव्य समझ कर देश, काल तथा पात्र के प्राप्त होने पर प्रत्युपकार न करने वाले के प्रति किया जाये।

दातव्यमिति यद्दानं दीयते अनुपकारणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्विकं स्मृतं॥

यही नियम यज्ञ पर भी लागू होता है।

संसार के अधिकतर लोग तो जानते ही नहीं हैं कि शास्त्र की आज्ञा है क्या, क्योंकि आधुनिक युग में शास्त्रों की शिक्षा न तो पाठशालाओं में दी जाती है और न घर में ही। बस सुनी सुनाई बातों पर विश्वास कर लेते हैं या किसी को देखकर परम्परा मानकर कर लेते हैं जैसे अर्जुन ने कह दिया था कि स्वजनों और गुरुजनों को मारने से पाप लगता है, पितर गिर जाते हैं, नरक में चले जाते हैं आदि आदि। उसको यह जानकारी नहीं थी कि यह नियम युद्धभूमि में लागू नहीं होता।

कुछ लोगों ने शास्त्र पढ़े भी होते हैं तो उनका अर्थ अपनी बुद्धि के अनुसार कुछ का कुछ निकाल लेते हैं। अन्य कुछ लोग कह दिया करते हैं कि शास्त्र पुराने समय के हैं, आज के समय में ये नियम व्यावहारिक नहीं हैं। सम्भवतः इसीलिए 17वें अध्याय के आरम्भ में अर्जुन ने यह प्रश्न किया होगा कि जो लोग शास्त्र विधि का पालन नहीं करते किन्तु श्रद्धा

से युक्त हैं वे किस श्रेणी में आते हैं।

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः॥

इसके उत्तर में भगवान् कहते हैं कि श्रद्धा तीन प्रकार की होती है – सात्त्विकी, राजसी एवं तामसी। जैसा मनुष्य का स्वभाव या अन्तःकरण होता है वैसी ही उसकी श्रद्धा भी होती है और जैसी जिसकी श्रद्धा होती है वैसा ही मनुष्य स्वयं भी होता है तथा उसकी उपलब्धि भी उसकी श्रद्धा के अनुसार ही होती है। सात्त्विक पुरुष चूँकि देवताओं को पूजते हैं, वे देवताओं को ही प्राप्त होते हैं (गीता 9.25)। इसी प्रकार राजसिक श्रद्धा वाले पुरुष यक्ष और राक्षसों को तथा तामस मनुष्य प्रेत और भूतगणों को प्राप्त होते हैं। शास्त्रों का ज्ञान न होने से मनुष्य इस अन्तर को समझ नहीं पाता। ज्ञातव्य है कि गीता को भलीभाँति समझ लेने से ही समस्त शास्त्रों का सार समझ में आ जाता है।

जो व्यक्ति शास्त्र ज्ञान से रहित होता है उसका क्या होता है? ऐसा व्यक्ति दम्भ और अहंकार से युक्त होकर अथवा बल के अभिमान और आसक्ति से प्रभावित होकर मनमाने ढंग से इन्द्रियों को सुखाकर तप भी करता है तो भी उसको कुछ प्राप्ति नहीं होती।

आगे के श्लोकों में भगवान् ने बताया है कि केवल श्रद्धा ही नहीं, आहार, यज्ञ, तप और दान – ये सब भी तीन-तीन प्रकार के होते हैं। आहार के विषय में भगवान् बताते हैं कि जो लोग सात्त्विक वृत्ति के होते हैं वे ऐसे भोजन को पसन्द करते हैं जो आयु, बल, आरोग्य, सुख और प्रीति को बढ़ाने वाले होते हैं। राजसिक स्वभाव वाले मनुष्यों का आकर्षण कड़ुवे, खट्टे, अधिक लवणयुक्त, अधिक गरम, अधिक ठण्डा, तीखे, रूखे, दाहकारक और दुःख, चिन्ता तथा रोगों को उत्पन्न करने वाले खाद्य पदार्थों की ओर होता है। तामसिक स्वभाव वाले व्यक्ति रसरहित, बासी, दुर्गन्धयुक्त, अपवित्र तथा ऐसे भोजन को पसन्द करते हैं जो सब प्रकार से शरीर को हानि पहुँचाने वाला होता है। अर्थात राजसिक व तामसिक लोगों के भोजन का चयन जिह्वा के स्वाद पर आधारित होता है जिससे क्षणिक सुख की अनुभूति होती है।

यज्ञ का वर्गीकरण करते हुए भगवान् बताते हैं कि जो यज्ञ शास्त्रों में वर्णित विधि के अनुसार किया जाये, बिना फल की इच्छा के कर्त्तव्य समझ कर किया जाये वह सात्त्विक यज्ञ होता है। यज्ञ करने का कर्तव्य तीसरे अध्याय के श्लोक संख्या 10 से 16 तक में समझाया गया है, जहाँ प्रजापति ब्रह्मा ने कल्प के आदि में यज्ञ सहित प्रजाओं को रचकर उनसे कहा था कि तुम लोग इस यज्ञ के द्वारा देवताओं को उन्नत करो और वे देवता तुम लोगों को उन्नत करें। इस प्रकार निःस्वार्थ भाव से एक दूसरे को उन्नत करते हुए तुम लोग परम कल्याण को प्राप्त हो जाओगे। इसके विपरीत जो यज्ञ केवल दम्भ अर्थात् दिखावे के लिए अथवा फल को दृष्टि में रखकर किया जाता है वह राजसिक यज्ञ कहलाता है। और तामसिक यज्ञ तो शास्त्र विधि से हीन, अन्नदान से रहित, बिना मन्त्रों के, बिना दक्षिणा के और बिना श्रद्धा के किया जाता है।

अध्याय 17 में भगवान् ने श्रद्धा को भी उतना ही आवश्यक बताया है जितना कि शास्त्रविधि को। श्रद्धा से रहित यज्ञ को तामसिक यज्ञ कहा गया है –

श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते। (गीता 17.13)

भगवान् ने तो यहाँ तक कह दिया कि बिना श्रद्धा के किया हुआ हवन, दिया हुआ दान, तपा हुआ तप और जो कुछ भी किया हुआ शुभ कर्म है वह सब का सब असत् होता है अर्थात वह कर्म न तो इस लोक में लाभदायक है और न मरने के बाद ही।

इसलिए हमें हर समय ध्यान रखना चाहिए कि जो भी शुभ कार्य करें वह श्रद्धा से युक्त होकर करें और जो भी कार्य करें वह शास्त्र सम्मत हो, शास्त्र-विरुद्ध कोई भी कार्य न करें।

Rising beyond Ego

Revered Swami Ramanand Ji Maharaj has written commentary on Geeta titled Gita Vimarsh. In the preface itself, Swamiji has dealt with the issue of ego and the mistake we make when we think that what we speak or write is our own thoughts. Swamiji clarifies that our present thinking is also not entirely our own. It is a combination of what we have heard, seen, imbibed from the existence. Nothing we say can be authenticated as our own original thought. In fact, Swamiji says that without our knowing, so much information, knowledge, call it what you may, comes to us.

Thoughts that come to us may also be due to messages beyond the physical realm. Therefore, when an author receives appreciation for what he writes, it appears totally misplaced. It is foolish even to think that somebody has written an insightful article. Nobody can claim proprietary rights about any of the thoughts spoken or written.

It is fallacious to claim exclusive ownership of any idea. "O Gargi," says Yagnavalkya - “one universal imperishable consciousness has penetrated everything in this universe”. Mundaka Upnishad says “Know that the Atman has interpenetrated the external and internal universe along with mind and vital energies.” Hence anything that we think also is not exclusively ours. We are all part of the universal consciousness. This leaves no place for pride or any egoistical thought.

This leads one to the second question as to why does one write in the first place. Is it to show-off to the world of how wise one has become? Or is it to gain approval of some of the people and bask in the glory of the encomiums? Or it is to boost one's already overblown ego by showing also how keenly the author has observed life and reached unique inferences? What does one write that has already not been expressed better by more accomplished people?

Swamiji provides the answer when HE says, "I write because I know what I write is not entirely my own but if somehow it is able to create a new meaning in the mind of someone or it may lend new depth to the thinking of the individual then I feel that my exertion has paid off."

Swamiji does not claim to be Mr. KNOW ALL. He clearly credits the readings, discussions and experiences for shaping his views. Often Swamiji says “what I know as of date”. Thus, Swamiji has shared copious amount of his Wisdom but done so by remaining humble. He does not say anywhere that his insight or conclusions are the last word on any subject. He encourages exchange of views and exhorts us to try and live by his teachings but reach our own conclusions.

Our existence is so brief in this world and on the evolutionary scale it is not even equal to a speck of dust. Yet we remain oblivious to the fact that all of our possessions will be left behind and all our ownership, disputes and claims, shall cease at once. Statements such as “I wrote it,” “I told you so.” etc. lose all importance. We have seen that our thinking even is not exclusively our own, hence let the

praise or criticism neither impact us nor our ego.

Vivekanand spoke of the Vedantic idea of this unity of all beings in his speech on 'God in Everything', delivered in London in 1896.

"This is another great theme of the Vedanta, this oneness of life, this oneness of everything. We shall see how it demonstrates that all our misery comes through ignorance, and this ignorance is the obsession with manifoldness. The separation between man and man, between nation and nation, between earth and moon, between moon and sun. Out of this idea of separation comes all misery. But, the Vedanta says, this separation does not exist, it is not real. It is merely apparent, the limitations imposed by the five instruments of knowledge man is bound with - the five sensory organs. In the heart of things, there is Unity still. And that Unity is God."

The only take away one could gather from reading literature left behind by Swamiji is that the idea of 'me' being this body or bearing a name or identification or having a status are meaningless.

From the above discussion, I have drawn the conclusion that - "I must remain grateful to all those who shared their knowledge and all the contemporaries who have influenced me with their thinking. All my thinking is not mine, hence there is no place for ego."

– Dinseh Bahl

❖ ❖ ❖

अखण्ड भजन का स्वरूप

आशय – एक बार भगवान् का भजन आरम्भ होने के बाद वह एक पल के लिये भी बन्द न हो; हर समय, हर स्थान पर, हर परिस्थिति (अनुकूल एवं प्रतिकूल), हर अवस्था (रोग, नीरोगता, बुढ़ापा, सम्मान, अपमान, जाग्रत्, नींद आदि) – में, हर कार्य करते समय, मृत्यु के क्षणों में भी निरन्तर, तैलधारावत् चलता रहे, उसको अखण्ड भजन कहते हैं। एक उदाहरण से यह बात और अधिक स्पष्ट हो जायेगी – एक बहुत बड़ी टंकी में आपने तेल भर दिया और उसकी टोंटी (नल) खोल दी। अब आप कहीं भी रहें, किसी भी परिस्थिति-अवस्था में रहें, कुछ भी करें, जब तक उस टंकी में तेल है, तब तक टोंटी चलती रहेगी। एक पल के लिये भी बन्द नहीं होगी। उसी प्रकार जब तक श्वास हैं, जब तक 'आप' हैं, आपका भजन चलता रहे, चलता रहे।

कितने घण्टे – आपके पास प्रतिदिन चौबीस घण्टे का समय रहता है। चौबीस घण्टे में से आप कितने घण्टे भगवान् का भजन करें और कितने घण्टे संसार के कार्य करें। अपने शरीर, घर, परिवार, नौकरी, व्यवसाय, समाज आदि के कार्य संसार के कार्य हैं। उत्तर है – मानव-जीवन केवल भगवान् के भजन के लिये ही मिला है, इसलिये चौबीस घण्टे ही भगवान् का भजन करें। एक महान् सन्त की वाणी है – यदि आपका एक पल भी भगवान् के भजन के बिना निकल जाये तो जवान बेटे की मौत में जितना दु:ख होता है, उससे भी करोड़ों गुना ज्यादा दु:ख होना चाहिये।

स्वरूप – अखण्ड भजन का स्वरूप है – भगवान् की स्मृति या याद और भगवान् में प्रियता। आप कहीं भी रहें, किसी भी अवस्था में रहें, कुछ भी करें, यदि आपको भगवान् की सही रूप में सजीव स्मृति बनी हुई है, आपको भगवान् याद हैं तो

आपका भजन हो रहा है और यदि आपको भगवान् की विस्मृति हो गयी, आप भगवान् को भूल गये तो आपका भजन नहीं हो रहा है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् ने कहा है –

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।

(8/7)

इसका अर्थ है – इसलिये हे अर्जुन! तू सब समय में निरन्तर मेरा स्मरण कर और युद्ध भी कर।

श्रीरामचरितमानस में आया है –

सादर सुमिरन जे नर करहीं।
भव बारिधि गोपद इव तरहीं॥

(1/111/4)

इसका अर्थ है – जो मनुष्य आदरपूर्वक (सही रूप में) उनका (भगवान् का) स्मरण करते हैं, वे तो संसाररूपी (दुस्तर) समुद्र को गाय के खुर से बने हुए गड्ढे के समान पार कर जाते हैं।

प्रियता के दो अर्थ हैं – पहला, आपको भगवान् प्यारे लगें, भगवान् के नाते उनकी हर चीज, हर रचना प्यारी लगे, उनके द्वारा बनाये गये सभी प्राणी, सभी मानव प्यारे लगें। उनका हर कार्य प्यारा लगे, उनके द्वारा भेजी गयी प्रतिकूलता, विपत्ति भी प्यारी लगे, उस में भी प्रसन्नता हो। प्रियता स्वत: सेवा और प्रेम में परिवर्तित हो जाती है। प्रियता का दूसरा अर्थ है – अपने लिये भगवान् की जरूरत महसूस होना। जिस प्रकार प्यासे मनुष्य को पानी की जरूरत महसूस होती है, पानी न मिलने पर वह छटपटाता है, पानी को पलभर के लिये भी भूल नहीं पाता है, उसी प्रकार आपको अपने लिये भगवान् की जरूरत महसूस होनी चाहिये। श्रीरामचरितमानस में आया है –

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहिराम॥

(7/130ख)

इसका अर्थ है – जैसे कामी को स्त्री प्रिय लगती है और लोभी को जैसे धन प्यारा लगता है, वैसे ही हे रघुनाथजी! हे रामजी! आप निरन्तर मुझे प्रिय लगिये।

तीन रूप – स्मृति का सरल अर्थ है – याद। याद के तीन रूप हैं – भगवान् को याद करना, भगवान् की याद आना, भगवान् की याद रहना। ये तीनों ही भजन हैं। इनका विश्लेषण इस प्रकार है –

याद करना – शरीर, इन्द्रियाँ, पूजा सामग्री और सांसारिक वस्तुओं की सहायता से आप नित्य प्रति प्रात: एवं सायं कुछ समय के लिये भगवान् को याद करते हैं, जैसे – भगवान् के दर्शन करना; उनकी पूजा, आरती, स्तुति, उपासना, वन्दना करना; त्रिकाल सन्ध्या करना; ग्रन्थों का श्रवण एवं पठन करना; तीर्थ, व्रत, उपवास, तप, दान करना आदि।

भगवान् को याद करने के लिये स्वस्थ शरीर और सबल इन्द्रियों की जरूरत होती है। बीमारी और बुढ़ापे में याद करने में काफी कठिनाई होती है। अन्तिम समय में शरीर एवं इन्द्रियों की शक्ति लगभग शून्य हो जाने के कारण याद करना और ज्यादा कठिन हो जाता है। शरीर एवं इन्द्रियों की शक्ति सीमित होने के कारण निरन्तर चौबीस घण्टे अखण्ड रूप से भगवान् को याद करना असम्भव प्रतीत होता है। जब तक आपका शरीर स्वस्थ है, तब तक अधिक-से-अधिक समय तक भगवान् को बहुत उत्साह से याद करना चाहिये। याद करने की विभिन्न साधनाओं में नाम-जप का विशेष महत्त्व है। नाम-जप की महिमा अपार है, अनन्त है, असीम है। श्रीरामचरितमानस में आया है –

बारक राम कहत जग जेऊ।
होत तरन तारन नर तेऊ॥

(2/216/4)

इसका अर्थ है – जगत् में जो भी मनुष्य एक बार 'राम' कह लेते हैं, वे भी तरने-तारने वाले हो जाते हैं।

याद आना – आप किसी भी साधन के द्वारा

भगवान् को याद करते नहीं हैं, लेकिन आपको अपने-आप भगवान् की याद आती है। सुयोग्य एवं सेवाभावी पति, पत्नी, पुत्र आदि प्रियजन के न रहने पर कुछ समय तक उसकी याद अपने-आप आती रहती है चाहते हुए भी उसको भूल नहीं पाते हैं। यह नियम है कि आप अपने जीवन में जिसकी तीव्र जरूरत महसूस करेंगे, उसकी याद आपको अपने-आप आयेगी। जिसको तीव्र प्यास लगी है, उसको पानी की याद स्वतः आयेगी। पल भर के लिये भी वह पानी को भूल नहीं पायेगा। यदि आप भगवान् की तीव्र जरूरत महसूस करेंगे तो आपको भगवान् की याद स्वतः आयेगी। भगवान् को याद करना बहुत श्रेष्ठ बात है, लेकिन उनकी याद स्वतः आना ज्यादा श्रेष्ठ है। याद आने में स्वस्थ शरीर एवं सबल इन्द्रियों की भी जरूरत नहीं है।

याद रहना – भगवान् की याद आना बहुत श्रेष्ठ बात है, लेकिन यह जरूरी नहीं है कि आपको चौबीस घण्टे निरन्तर भगवान् की याद आती रहे। यदि अल्प समय के लिये भी आपको भगवान् की याद नहीं आयी, आप भगवान् को भूल गये और उसी समय शरीर शान्त हो गया तो आप के जीवन की पूर्णता नहीं होगी। इसलिये याद आने से भी श्रेष्ठ बात है – भगवान् की याद सब समय, सभी स्थानों पर, सभी अवस्थाओं, सभी परिस्थितियों में स्वतः रहना। आपको कुछ सांसारिक बातें सदैव स्वतः याद रहती हैं, जैसे – अपना नाम, अपने पति, पत्नी का नाम, आप के कितने बच्चे हैं, आपका गाँव कौन-सा है आदि।

याद रहने के उपाय – याद रहने के उपाय इस प्रकार हैं –

1. मान लेना – भगवान् ने आपको मानने या स्वीकार करने की शक्ति दी है। यह शक्ति अन्तिम श्वास तक आपके पास यथावत् रहती है। मानने में प्रयास, पराश्रय, पराधीनता, अभ्यास, समय अपेक्षित नहीं है। विवाह होते ही आपने मान लिया – यह मेरी पत्नी है, मेरे पति हैं; पुत्र होते ही यह मान लिया – यह हमारा पुत्र है; मकान खरीदा, तत्काल मान लिया – यह हमारा मकान है; मकान बेचा, यह मान लिया, यह मकान हमारा नहीं है आदि। यदि आप निम्नलिखित सच्ची बातों को मान लें तो आपको भगवान् सदैव स्वतः याद रहेंगे –

(क) केवल भगवान् है – इस जगत् में केवल भगवान् हैं और वे विभिन्न रूपों में अपनी लीला कर रहे हैं। भगवान् के अलावा कुछ भी नहीं है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् की वाणी है –

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव॥

(7/7)

अर्थात् हे धनंजय! मुझसे भिन्न दूसरा कोई भी परम कारण नहीं है। यह सम्पूर्ण जगत् सूत्र में सूत्र के मणियों की तरह मुझ में गुँथा हुआ है।

'वासुदेवः सर्वमिति।'

(7/19)

अर्थात् सब कुछ वासुदेव ही है।

श्रीरामचरितमानस में आया है –

हरि ब्यापक सर्बत्र समाना।
प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना॥

(1/184/5)

अर्थात् भगवान् शंकर कहते हैं – मैं तो यह जानता हूँ कि भगवान् सब जगह समान रूप से व्यापक हैं, प्रेम से वे प्रकट हो जाते हैं।

(ख) भगवान् का है – इस जगत् के मालिक भगवान् हैं। यह जगत् भगवान् का है। इस जगत् के निर्माता, संचालक, व्यवस्थापक एवं नियन्त्रक भगवान् हैं। उन्होंने इस जगत् की केवल तीन चीजें आपको सौंपी हैं – शरीर; निकट परिवारजन जैसे – माता, पिता, पति, पत्नी, सन्तान आदि; सामान-सम्पति। इन तीनों के मालिक भी भगवान् हैं।

(ग) प्रेम देना है – भगवान् प्रेम के भूखे हैं, प्रेम के प्यासे हैं, प्रेम देने का सुअवसर प्रदान

करके अपना प्रेमी भक्त बनाने के लिये भगवान् ने आपको उपर्युक्त तीन चीजें सौंपी हैं। शरीर को भगवान् का मेहमान मानकर भगवान् की प्रसन्नता के लिये इसकी भरपूर सेवा करनी है। शरीर को श्रमी, संयमी, सदाचारी, स्वावलम्बी रखना; इसको मेरा, मेरे लिये और मैं नहीं मानना इसकी सेवा है। परिवारजनों को भगवान् का साक्षात् स्वरूप मानकर उनको प्रसन्नता देनी है। सामान-सम्पत्ति को भगवान् की धरोहर मानकर सँभालना एवं इसका सदुपयोग करना है।

(घ) भगवान् के कार्य – जगत् के मालिक भगवान् हैं, जगत् उनका है। जगत् के सब कार्य भगवान् के कार्य हैं। शौच, स्नान, व्यायाम, प्राणायाम, घूमना, नाश्ता, भोजन, आराम, रात्रि-विश्राम आदि सभी शरीर के कार्य भगवान् के कार्य हैं। घर भगवान् का है। इसलिये घर की सफाई, घर के सभी कार्य भगवान् के कार्य हैं। परिवारजन प्रभु के स्वरूप हैं, इसलिये इनकी सेवा के सब कार्य भी भगवान् के कार्य हैं। व्यापार, नौकरी, समाज आदि के सब कार्य भी भगवान् के कार्य हैं। भगवान् के कार्यों को पूरा समय, शक्ति, बुद्धि, योग्यता लगाकर सावधानीपूर्वक भगवान् की प्रसन्नता के लिये करना है। इसी का नाम है – अपने कर्मों के द्वारा भगवान् की पूजा करना। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् की वाणी है –

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः॥

अर्थात् जिस परमेश्वर से सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत् व्याप्त है, उस परमेश्वर की अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है।

(च) महिमा – भगवान् समर्थ हैं, सदैव हैं, सबके (माता-पिता) हैं, सब में हैं, सर्वत्र हैं, सर्वज्ञ हैं, परम सुहृद् हैं, पतितपावन हैं, अधम-उद्धारण हैं, दीनबन्धु हैं, दीनानाथ हैं।

(छ) वे भेजते हैं – अनुकूलता एवं प्रतिकूलता भगवान् भेजते हैं। क्यों? आपको अपना प्रेमी भक्त बनाने के लिये। अनुकूलता को अपने प्रयासों का परिणाम नहीं मानें, उसका भोग एवं उसका अभिमान नहीं करें। उसके द्वारा विश्वरूपी भगवान् को प्रेम दें। प्रतिकूलता में इस आधार पर एकदम निश्चिन्त एवं प्रसन्न रहें कि यह प्रतिकूलता भगवान् ने भेजी है। भगवान् मेरे माता-पिता हैं। वे मेरा अहित नहीं कर सकते। इसमें मेरा विशेष हित निहित है। जिसके माध्यम से वह प्रतिकूलता आयी है, उसको भगवान् का स्वरूप मानकर प्रेम देना है। विचार करने पर आपको अनुभव होगा कि अनुकूलता का निर्माण करना, उसको बनाये रखना और बढ़ाना एवं प्रतिकूलता को रोकना और टालना आपके वश की बात नहीं है। आप केवल प्रयास कर सकते हैं।

2. मानने के उपाय – भगवान् ने आपको मानने की शक्ति दी है। आप इन बातों को मान सकते हैं। फिर भी यदि आप नहीं मान पायें तो निम्नलिखित उपाय करें – मन में पक्का निश्चय करें कि मुझे इन बातों को मानना है। पूजा के कमरे में या किसी भी जगह अकेले बैठें। इन बातों को अपनी वाणी से हल्की तेज आवाज में बोलें, अपने कानों से सुनें। हर बात को दस-दस बार बोलें। भगवान् से प्रार्थना करें – हे भगवान्! आप अपनी कृपा से मुझे इन बातों को मनवा दीजिये। जीवन में एक ही इच्छा रखिये – मुझे इन बातों को मानना है। अन्य सभी इच्छाओं को भगवान् के चरणों में चढ़ा दीजिये – वे चाहें तो पूरी करें, न चाहें तो न करें। लेकिन इस एक इच्छा को अवश्य पूरी करें। भगवान् अपनी कृपा से आपकी इच्छा को पूरी कर देंगे। फिर आप के जीवन में स्वतः अखण्ड भजन होगा।

– डॉ. श्रीभीकमचन्दजी प्रजापति

(कल्याण पत्रिका संख्या 12 भाग-87 से साभार उद्धृत)

जन्मोत्सव शिविर दिसम्बर 2023 का विवरण

जन्मोत्सव शिविर का शुभारम्भ दिनांक 18 दिसम्बर को दोपहर बाद ड्यूटियाँ निर्धारित करने से हुआ जिसका समापन दिनांक 21 दिसम्बर 2023 को प्रातः काल के सामूहिक जाप के साथ हुआ। इस शिविर में 66 साधकों ने भाग लिया। तदोपरान्त अल्पाहार के बाद जाने वाले साधकों को मार्ग का भोजन देकर विदा किया गया। जिन साधकों की ट्रेन दोपहर के बाद की थी उनको भोजन के बाद विदा किया गया। शिविर का संचालन पूज्य गुरुदेव की अध्यक्षता में सभी साधकों के सहयोग से सुचारु रूप से हुआ। तीन दिवसीय शिविर में तीन रात को पूरी-पूरी रात अपनी-अपनी ड्यूटियों के अनुसार साधकों ने अखण्ड जाप किया। शिविर में जो प्रवचन हुए उनका सारांश नीचे दिया जा रहा है –

प्रवचन सार

बहिन कमला वर्मा जी

यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते॥

(गीता 4.22)

जो सहज में प्राप्त है उसे स्वीकार करना है। भीतर प्रश्न नहीं होना चाहिए। इससे बन्धन नहीं होता। मन में द्वन्द्व नहीं होना चाहिए। जैसे-जैसे हममें ज्ञान आता जाता है, हम स्वीकार करने लगते हैं।

यह संसार महासागर है हम मानव हैं तिनके।
एकाएकी आन मिले हैं कौन यहाँ हैं किनके॥

जीवन विकास की पाठशाला है। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, परिस्थितियों में स्वीकार्यता आती जाती है। फिर साधक की समझ खुलने लगती है। वह समझ जाता है कि सभी परिस्थितियाँ कल्याणकारी हैं। स्वामी जी ने कहा है, ''वह दृष्टि अधूरी है जो सुख देखती है। वह दृष्टि भी अधूरी है जो दुःख देखती है। वह दृष्टि भी अधूरी है जो सुख और दुःख दोनों को देखती है। दृष्टि वही पूरी है जो सुख और दुःख दोनों में प्रभु का मंगलमय विधान देखती है।''

कोई तन से है दुखी, धन हित कोई उदास।
थोड़े थोड़े सब दुखी, सुखी एक हरिदास॥

स्वामी जी ने कहा है –

"Cease to blame the world.
Cease to blame your destiny for unhapiness.
Only look out properly."

सन्तोष की पहचान है बेचैनी का अभाव, प्रयत्न का अभाव नहीं। फल के प्रति सन्तोष होना चाहिए।

गोधन गजधन बाजिधन और रतन धन खान।
जब आवत संतोष धन सब धन धूरि समान॥

सुख-दुःख का पैमाना हमारी माँगें हैं। यदि हज़ार की माँग है और दस हज़ार मिल जायें तो हम सुखी होते हैं। यदि लाख की माँग है और नब्बे हज़ार मिलें तो हम दुखी होते हैं।

श्री शिव कुमार जायसवाल जी

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्॥

(गीता 7.21)

अर्थात् जो-जो भक्त देवता के जिस-जिस स्वरूप को श्रद्धापूर्वक भजते हैं मैं उस भक्त की उस देवता

के प्रति अचल श्रद्धा स्थापित कर देता हूँ।

भगवान् यहाँ श्रद्धा की बात करते हैं, विश्वास की नहीं। विश्वास पतला होता है। जब विश्वास में लगन और भक्ति का सम्पुट मिलता है तो श्रद्धा बनती है। श्रद्धा कीमती और गहरी चीज़ है।

इस बात को एक दृष्टान्त के माध्यम से समझा जा सकता है। बेटा सामने बैठा भोजन कर रहा था। किसी ने माँ से पूछा कि क्या तुम्हारा बेटा जीवित है? माँ ने कहा तुम्हारा सवाल गलत है, मेरा बेटा तो मेरे सामने बैठा है। वही बेटा एक बार कुम्भ के मेले में खो गया और कई वर्ष तक नहीं लौटा। माँ से फिर पूछा गया कि क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम्हारा बेटा जीवित है तो माँ ने कहा कि हाँ मुझे विश्वास है कि मेरा बेटा जीवित है। विश्वास की गहराई में कहीं अविश्वास भी होता है।

यहाँ हम कह सकते हैं कि भगवान् आप देवताओं के प्रति हमारी श्रद्धा स्थापित करते हैं, स्वयं के प्रति नहीं। ऐसा क्यों? भगवान् कहते हैं कि संसार में सभी अपना मान चाहते हैं। यदि मैं भक्तों की अपने में श्रद्धा स्थापित करूँ तो स्वार्थपरक कहलाऊँ। सकाम भक्त भी अन्त में निष्काम बन जाते हैं और देवताओं के प्रति की गई श्रद्धा अन्ततः मुझे ही प्राप्त होती है।

मत्तः परतरं नान्यत् किंचिदस्ति धनञ्जयः।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणाः इव॥

(गीता 7.7)

अर्थात् भगवान् के अतिरिक्त सृष्टि में कुछ और नहीं है। सारा संसार उनमें ऐसे ही पिरोया है जैसे धागे में मोती पिरोये रहते हैं।

बहिन रमना सेखड़ी जी

सभी भाई बहनों में बैठे राम को मेरा राम राम।

हमारा शरीर दो तत्त्वों से बना है – जड़ और चेतन। सभी में प्रभु का बसेरा है परन्तु मानव को विशेष शक्ति दी गई है। हम जितना अपनी चेतना को जागृत करते जायेंगे, प्रभु के निकट होते जायेंगे। काम हम हाथों से करते हैं पर मन में राम नाम चलते रहना चाहिए। प्रभु से युक्त होकर काम करने से उसका परिणाम अच्छा ही आयेगा। प्रभु ने हमें निमित्त बनाया है हमें ऊँचा उठाने के लिये। हम खुद को ज़ागरूक रखें। किसी का दिल न दुखायें। हम नये संस्कार न बनने दें।

जो हमारे विचार आते हैं वे फिर शब्द बनते हैं, फिर कर्म बनते हैं और फिर वही संस्कार बनते हैं। लोगों से हम मिलते हैं, उनकी अच्छी बातों को हम ग्रहण करें। गुण तीन हैं। यदि सतोगुण सोने की चैन है तो तमोगुण लोहे की चैन है। हमें गुणातीत होते जाना है।

जिसके सिर ऊपर तू स्वामी सो दुःख कैसे पावे।

संसार का अर्थ है सरकना, परन्तु आत्मा वैसी की वैसी है। लहर समुद्र से अलग नहीं, समुद्र का हिस्सा है। वैसे ही हम परमात्मा के अंश रूप हैं। हमें खुद को कर्ता नहीं मानना है। हम हर काम प्रभु की शक्ति से कर रहे हैं।

स्वामी जी ने लिखा है – **''परिवार की हर ज़िम्मेदारी पूरी करो पर अपने को कर्ता मत मानो।''** कर्तव्यों को प्रसन्नता से निभाना है। ऐसे हम आगे बढ़ते जायेंगे और प्रभु से एक हो जायेंगे। महाराज ने कहा है – ''हर काम को करते हुए मन में राम नाम का जाप करते रहो। टहलते समय भी राम नाम चलना चाहिए।'' RAM का अर्थ है – Right Action Man। जो भी काम करें वह प्रभु के चरणों में समर्पित कर देना है।

बहिन शशि बाजपेयी जी

सीयराममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥

व्यवहार हमारी साधना का अंग है। हम ऐसा व्यवहार करें जो साधन बन जाये। महाराज जी कहते हैं – हमारा मार्ग तप, त्याग, वैराग्य का नहीं है। यह समर्पण का मार्ग है। गेरुए वस्त्र पहनने से कोई संन्यासी नहीं बन जाता। सेवा और साधना मिलकर सोने में सुगन्ध बन जाती है। छोटे-छोटे नुस्खों से हम सेवा कार्य कर सकते हैं। हम किसी को पानी देकर, सड़क पार कराकर, सांत्वना देकर, बहते हुए नल को बन्द करके सेवा कर सकते हैं।

ईश्वर अंस जीव अबिनासी।
चेतन अमल सहज सुखरासी॥

हमारे भीतर सबके लिये प्रेम होना चाहिए। न कोई छोटा है न कोई बड़ा।

प्रेम न बाड़ी ऊपजे प्रेम न हाट बिकाय।
राजा प्रजा जेहि रुचे सीस देइ ले जाय॥

हम हर किसी से इस भाव से मिलें कि वह प्रसन्न हो जाये। हमें सभी की भूरि-भूरि प्रशंसा करनी चाहिए। हर एक में गुण छिपे हैं। प्रेम उत्पादिनी शक्ति है। जब प्रेम प्रकट हो जाता है तो अवगुण दिखाई नहीं देते। गुरु जी कहते हैं कि प्रेम भरपूर करना चाहिए। हम प्रेम करने में कंजूसी कर जाते हैं। जो प्रेम करने की योग्यता नहीं रखता, उसका जीवन ठूठ है। प्रेम में प्रशंसा होनी चाहिए। प्रेम में आदान प्रदान होता है। प्रेम में कोई माँग नहीं होती। प्रेम निःस्वार्थ होता है। प्रेम की लगी हुई लगन दग्ध कर देती है सारे कुसंस्कारों को। सतोगुण में इतनी शक्ति है कि तमोगुण का निष्कासन कर देती है। मोहर्रमी चेहरा साधना की निशानी नहीं है। साधक अपनी प्रसन्नचित्तता को कभी नहीं खोता। हम अपनी सौम्यता को खो न दें। उद्विग्न नहीं होना है। जीवन में जितनी बड़ी प्रतिकूलता है उतना ही बड़ा अवसर हमें मिला है।

राम रूप कण-कण में देखूँ
करूँ सभी से पावन प्यार।

जो प्रेम माँग करता है वह दूषित हो जाता है। उसकी उपयोगिता समाप्त हो जाती है।

श्री विष्णु गोयल जी

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर॥
(गीता 3.9)

अनासक्त भाव से कर्म करें। ब्रह्मा जी ने जब सृष्टि की रचना की तो यज्ञ रचा। प्रजापति ने पूरी सृष्टि को आदेश दिया कि यज्ञ के द्वारा तुम अपनी वृद्धि करो। यह यज्ञ तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करेगा। सामान्यतः यज्ञ का अर्थ हवन से लिया जाता है। होम होता है, अग्नि प्रज्ज्वलित की जाती है, उसमें आहुतियाँ दी जाती हैं, देवताओं का आह्वान किया जाता है। आहुतियों को देवता ग्रहण करते हैं और पुष्ट होते हैं। फिर देवता यज्ञकर्ता को भोग देते हैं, फिर उसी भोग में से एक भाग देवता को अर्पित किया जाता है। इस प्रकार से चक्र पूरा होता है और यह क्रम चलता रहता है। सारी सृष्टि महाशक्ति के द्वारा एक दूसरे पर आधारित होकर चल रही है। हमें दोषदृष्टि नहीं रखनी चाहिए। हम सृष्टि रूपी मशीन का एक पुर्जा हैं, एक यूनिट हैं। हम इस सृष्टि के अंश हैं। जिस मकान में हम रहते हैं उसमें कितनों का योगदान है। कहीं से ईंट आई, कहीं से सीमेंट आया। लाखों लोगों के सहयोग से यह मकान बना है जिसे हम मेरा कहते हैं। इस बहती हुई नदी में हम बूँद मात्र हैं। हम अपने दायित्त्व की पूर्ति करें। हम दूसरों पर अवलम्बित हैं, दूसरे हम पर आंशिक रूप

से अवलम्बित हैं। परस्पर अवलम्बन का ताना-बाना बड़ा पेचीदा है। विश्व की लीला अवलम्बन से चलती है। इसके बिना तो यह विश्व चल ही नहीं सकता। जब यह पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है तो सृष्टि विखण्डित हो जाती है और महाप्रलय आ जाती है।

आत्मदान पर आधारित है यह सारी लीला। आत्मदान इसका आदि, मध्य और अन्त है। बलिदान इसका एक मौलिक नियम है। जब तक चेतना स्वत: विकसित नहीं होती, यह आत्मदान अनजाने में होता है। सेवा वास्तव में यज्ञ है।

(2)

आम तौर पर यह समझा जाता है कि अध्यात्म एक हौवा है। वास्तव में जो ऐसा समझते हैं वे इसे ठीक प्रकार से नहीं समझते। अध्यात्म तो जीवन जीने की कला है। गुरुदेव की शिक्षा पद्धति प्रचलित विचारधारा से अलग है। जंगल में जाकर विकास नहीं हो सकता। चमड़ी मोटी हो जाती है, इन्द्रियाँ अपनी संवेदनशीलता खो देती हैं। त्रुटियुक्त जीवन की पूर्ण स्वीकृति ही अध्यात्म है। अध्यात्म का उद्देश्य है जीवन की पूर्णता और समग्रता। भगवती सूत्र को सबमें समावेशित करके स्वीकार करना अध्यात्म है। विकास के अधिष्ठाता को सबमें देखना ही अध्यात्म है। व्यष्टि और समष्टि में ईश्वरीय सूत्र खोजने का प्रयास ही अध्यात्म है। पापी और सन्त में, चींटी और हाथी में चेतन सत्ता एक समान ही विद्यमान है। भागवत व्यक्ति किसी का बहिष्कार नहीं कर सकता। किसी से घृणा कर हम अपने विकास में रोड़ा बनते हैं। अध्यात्म जीवन में पलायन नहीं सिखाता। जीवन से जुड़कर ही व्यक्ति विकास कर सकता है, उन्हें छोड़कर नहीं। जीवन में समस्याओं का आना अवश्यम्भावी है। प्रतिकूलता को खुशी-खुशी स्वीकार करना है, उसे दबाववश स्वीकार नहीं करना। हम हर काम प्रभु के नाते करेंगे तो हमसे त्रुटियाँ कम होंगी। यह सब सतत राम नाम जाप से होगा।

बहिन सुशीला जायसवाल जी

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभिजातस्य भारत॥

(गीता 16.3)

तेज, क्षमा, धारणा शक्ति, शुचिता, अद्रोह, न अतिमानिता अर्थात् अधिक सम्मान की आकांक्षा का अभाव – ये दैवी सम्पदा से युक्त व्यक्ति के लक्षण हैं।

तेज का अर्थ है – श्रेष्ठ पुरुषों का वह प्रभाव जिससे विषयासक्त पुरुष स्वत: भगवद्मार्ग में प्रवृत्त हो जाते हैं।

ऐसी मेरी बुद्धि भगवान्।
समझे खुद को धनवान गुणी
पर हरि विमुख मन अवगुण खान॥
काम को पौरुष तेज क्रोध को
लोभ को सञ्चय तर्क को ज्ञान।
दीन दुःखी पर करे क्रूरता
दया धर्म का करे बखान॥

क्षमा : अकारण ही यदि कोई महापुरुष का अनिष्ट करता है तो सामर्थ्य होते हुए भी वे उसे दण्ड नहीं देते। क्षमा मोहवश, भयवश और प्रलोभनवश हो सकती है। ऐसी क्षमा दैवी सम्पदा की श्रेणी में नहीं आती। यदि सुधार के लिए क्षमा मांगते हैं तो यह विकास की ओर ले जाती है। दूसरे की गलती को खुशी-खुशी क्षमा करना चाहिए, यह उदारता है।

धैर्य : (धारणा शक्ति) समता से युक्त होकर अव्यभिचारिणी भक्ति के द्वारा मन प्राण बुद्धि को धारण करना धृति है। धारणा शक्ति सात्त्विकी और प्रबल होनी चाहिए। नहीं तो हम उसे कार्यरूप में परिणत नहीं कर पायेंगे।

शौच : बाहर की तथा भीतर की शुद्धता होनी चाहिए।

निर्मल मन जन सो मोहि पावा।
मोहि कपट छल छिद्र न भावा॥

शरीर की शुद्धता के साथ मन वाणी बुद्धि की शुद्धता होनी चाहिए। हम हर समय अभ्यास करते रहें। यदि हम प्रमाद (आलस्य) में रहेंगे तो विचारों को कार्यरूप में परिणत न कर सकेंगे। हम व्यर्थ और अनर्थ की बात न करें; अर्थ की थोड़ी बात करें और परमार्थ की अधिक बात करें।

शुद्धता शारीरिक, वाचिक, कौटुम्बिक और आर्थिक प्रकार की होती है। कुटुम्ब के सभी कर्तव्य हमें करने हैं। धन शुद्धता से आना चाहिए। जब हमारा उद्देश्य परमार्थ प्राप्ति का होगा तभी ये सब शुद्ध होंगे।

अद्रोही : जो सन्तों का अकारण अहित करता है, सन्त उससे डाह नहीं रखते। डाह का अर्थ है मौके की तलाश में रहना कि कब बुरा करने वाले को हानि पहुँचाई जाये।

अतिमानिता : यदि हमें मान की, प्रशंसा की चाह है तो इसे अतिमानिता कहा जाता है। यदि हमें अपने गुण दिखाई देते हैं तो यह हमारी कमी है। सतोगुण तो परमात्मा के गुण हैं। यदि हम ऐसा विचार करेंगे तो दोषरहित रहेंगे।

(2)

हमारी साधना शरणागति से आरम्भ होती है और समर्पण पर समाप्त होती है। शरणागति में द्विचित्तता का अभाव होता है। भगवत् प्राप्ति के लिये महाराज जी ने तीन साधन बताये हैं – बाह्य साधन, आन्तरिक साधन और आभ्यन्तरिक साधन। बाह्य साधन सत्य, प्रेम और सेवा है; आन्तरिक साधन में अभीप्सा, समर्पण और ग्रहणशीलता है। आभ्यन्तरिक साधन के लक्षण हैं – शान्ति, स्थिरता और सौम्यता। जब हम बाह्य साधन करते हैं तो फिर आन्तरिक साधन होने लगता है। फिर आभ्यन्तरिक साधन फलित होता है। इससे शान्ति, स्थिरता और समता (समत्व योग) आती चली जाती है। आत्म-समर्पण ही साधना का आदि, मध्य और अन्त है। आत्मदान से ही साधना का आरम्भ होता है। आत्मदान के पूर्ण होने पर भगवती कृपा फलित हो जाती है। आत्म-समर्पण के बिना भगवती चेतना क्रिया ही नहीं कर पाती। हम स्वयं को भगवती शक्ति को कैसे दे सकेंगे। मोह, ममता और आसक्ति से हमारे अन्दर अलग भाव पैदा होता है। जब हमारे अन्दर यह भाव उत्पन्न हो जाता है कि सब ओर परमात्मा ही परमात्मा है, उसके सिवा कुछ और है ही नहीं, तो हमारा आत्मदान सुगम हो जाता है। आत्मदान का अर्थ है अपने को भलीभाँति अर्पण कर देना, पूरी तरह से।

बाह्य समर्पण और आन्तरिक समर्पण – धन, दौलत, योग्यता, कुटुम्ब आदि, जो भी हमारे पास है उसे प्रभु का समझना। संसार में जो भी हमें प्राप्त है उसी से प्राप्त है – ऐसा समझना बाह्य समर्पण है। आन्तरिक समर्पण में मन, बुद्धि, इन्द्रियाँ, प्राण – इन सबको प्रभु को अर्पण कर देना है।

(पूरा प्रवचन सुनने के लिये 'गुरु रामानन्द साधना और व्यवहार' YOU TUBE में क्लिक करें)

अन्त में शिविर की पूर्ति करते हुए माननीय अध्यक्ष जी ने सर्वप्रथम श्री गुरु महाराज का धन्यवाद किया। तदोपरान्त शिविर में भाग लेने वाले सभी साधकों के प्रति आभार व्यक्त किया, विशेष रूप से उन साधकों का जिन्होंने ड्यूटियाँ ली और उनको पूर्ण निष्ठा से निभाया। साथ ही धाम के प्रबन्धक, सेवक-सेविकाओं तथा हलवाई, उनके सहयोगी व सफाई कर्मचारियों के प्रति भी आभार व्यक्त किया जिनके सहयोग से शिविर सुचारु रूप से सम्पन्न हो पाया।

कार्यकारिणी समिति की बैठक का विवरण

साधना परिवार की कार्यकारिणी समिति की बैठक दिनांक 20 दिसम्बर, 2023 को प्रातः 11:00 बजे से साधना धाम हरिद्वार के कार्यालय में श्री विष्णु कुमार जी गोयल की अध्यक्षता में आहूत की गई जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित रहे –

1. श्री विष्णु कुमार गोयल – अध्यक्ष
2. श्री अनिल चन्द्र मित्तल – उपाध्यक्ष
3. श्रीमती सुशीला जायसवाल – वरिष्ठ उपाध्यक्ष
4. श्रीमती रमना सेखड़ी – सचिव
5. श्री अनिरुद्ध अग्निहोत्री – कोषाध्यक्ष
6. श्रीमती कृष्णा भण्डारी – सदस्य
7. श्रीमती सोमवती मिश्रा – सदस्य
8. श्रीमती कमला सिंह वर्मा – सदस्य
9. श्री रमेश जायसवाल – सदस्य
10. श्री पुरन्दर तिवारी – सदस्य
11. श्री सुधीर कान्त अग्रवाल – सदस्य
12. श्री हरपाल सिंह राजपूत – सदस्य
13. श्री विजयेन्द्र भण्डारी – सदस्य
14. श्री कृष्ण अवतार अग्रवाल – सदस्य
15. श्री रविकान्त भण्डारी – प्रबन्धक
16. श्री संजय सेखड़ी – विशेष आमन्त्रित सदस्य

गुरु वन्दना के पश्चात बैठक की कार्यवाही आरम्भ की गई। सर्वप्रथम दिनांक 02 जुलाई 2023 को आहूत पिछली बैठक की कार्यवाही समस्त उपस्थित सदस्यों को पढ़कर सुनाई गई। सभी सदस्यों ने इसका अनुमोदन किया। तत्पश्चात कार्यसूची के अनुसार निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार विमर्श हुआ व निर्णय लिये गये:-

1. माननीय अध्यक्ष जी द्वारा दिगोली तपस्थली में निर्माण कार्य की प्रगति से अवगत कराया गया व समीक्षा की गई। नए नक्शे के अनुसार निर्माण कार्य कराने पर सहमति हुई। माननीय अध्यक्ष जी ने बताया कि इस कार्य के लिए लगभग 25 लाख रुपये का दान आ चुका है।
2. दिगोली तपस्थली में श्री सुभाष ग्रोवर जी की अस्थायी एवं अवैतनिक प्रबन्धक के रूप में नियुक्ति का सदस्यों द्वारा अनुमोदन किया गया।
3. वर्ष 2022-23 के तुलन-पत्र का वितरण सभी उपस्थित सदस्यों में किया गया। मूल्यह्रास के मुद्दे पर श्री गिरीश मोहन, सी.ए. के साथ उचित विचार विमर्श किये जाने के बाद निर्णय करने पर सदस्यों द्वारा सहमति दी गई। श्री के.डी. श्रीवास्तव, लेखाधिकारी,प्रयाग का लेखा सम्बन्धी कार्य में सहयोग लेने पर सहमति जताई गई।
4. निर्माण समिति के सदस्य श्री राजीव रतन जी, श्री अनिल चन्द्र मित्तल जी तथा श्री सचदेव जी द्वारा विचार विमर्श करने के पश्चात साधना धाम हरिद्वार में वाटर-प्रूफिंग का कार्य कराने पर सहमति व्यक्त की गई।
5. धाम में रंगाई पुताई एवं अन्य निर्माण कार्यों हेतु लगभग 7 लाख रुपये के व्यय को स्वीकृति दी गई।
6. पूज्य गुरुदेव के चित्र सम्बन्धी सामग्री की उपलब्धता के लिये श्री संजय सेखड़ी जी को अधिकृत किया गया।
7. दिगोली तपस्थली में एक होम्योपैथिक औषधालय खोलने पर आम सहमति दी गई।
8. साधना धाम के बेसमेंट में उचित निर्माण हेतु समस्त सदस्यों द्वारा सहमति प्रदान की गई।
9. साधना धाम हरिद्वार में होम्योपैथिक चिकित्सालय एवं फिजियोथेरापी की मशीनों की मरम्मत आदि पर शीघ्र कार्यवाही करने का निर्णय लिया गया।
10. दिगोली तपस्थली में शिविर हेतु 12-13-14 मार्च

की तिथियों का निर्णय लिया गया जिसकी पूर्ति 15 मार्च को होगी।

तत्पश्चात निम्न साधकों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई:-

1. श्रीमती सुरेखा अग्रवाल धर्मपत्नी श्री अजय कुमार अग्रवाल, दिनांक 26.10.2023
2. श्री सुरेन्द्र बाबाजी, अमेरिका में, दि. 04.11.2023
3. श्रीमती साधना, भांजी श्री सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल, दिनांक 5.11.2023
4. श्रीमती शशी, बहन श्री सुरेंद्र कुमार अग्रवाल, दिनांक 7.11.2023
5. श्रीमती पंकज पोरवाल (उर्फ कंचन पोरवाल), कानपुर दिनांक 11.12.2023
6. श्रीमती श्यामा मिश्रा, कानपुर, दिनांक 16.12.2023
7. श्रीमती कमलेश कंकड़िया, दिल्ली, दिनांक 29.12.2023

इसके पश्चात माननीय अध्यक्ष जी ने समस्त उपस्थित सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

अन्त में पूज्य गुरुदेव को भोग लगाकर बैठक की समाप्ति की गई।

(विष्णु कुमार गोयल)
अध्यक्ष

(रमना सेखड़ी)
सचिव

शोक समाचार

समस्त साधना परिवार को अत्यन्त दु:ख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि,

श्रीमती पंकज पोरवाल (उर्फ कंचन), कानपुर का दिनांक 11.12.2023 को देहावसान हो गया है।

❖ ❖ ❖

कानपुर के काकादेव केन्द्र की उच्च कोटि और सेवा भाव में रत वरिष्ठ साधिका श्रीमती श्यामा मिश्रा जी का दिनांक 16.12.2023 को देहावसान हो गया है। पूज्य गुरुदेव से विनती है कि उनकी आत्मा को अपने चरण कमल में स्थान प्रदान करें और परिवार वालों को इस महान दु:ख को सहने की शक्ति प्रदान करें। ओ३म् शान्ति शान्ति शान्ति। राम राम राम राम राम राम राम राम राम।

❖ ❖ ❖

प्रबन्धक, साधना धाम श्री रवि भण्डारी जी की बड़ी बहिन दिल्ली निवासी श्रीमती कमलेश कंकड़िया जी का 83 वर्ष की अवस्था में दिनांक 29.12.2023 को निधन हो गया। ॐ शान्ति।

❖ ❖ ❖

पूज्य गुरुदेव से विनम्र प्रार्थना है कि इन सभी दिवंगत आत्माओं को अपने श्री चरणों में स्थान दें तथा इनके परिवार जनों को इनका वियोग सहने की यथायोग्य शक्ति प्रदान करें। साधना परिवार के सभी साधक भाई-बहन अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

16.11.23 से 13.2.24 तक के 2100/- से ऊपर दानदाताओं की सूची

साधकगण अपने दान की राशि चैक द्वारा निम्नलिखित बैंक खातों में जमा करवा सकते हैं।

Swami Ramanand Sadhna Pariwar
BANK OF INDIA,
Haridwar
A/c No.: 721010110003147
I.F.S. Code: BKID0007210

Swami Ramanand Sadhna Pariwar
HDFC BANK,
Bhoopatwala, Saptrishi Chungi, Haridwar
A/c No.: 50100537193693
I.F.S. Code: HDFC0005481

साधना धाम का PAN नम्बर AAKAS8917M है।

कृपा करके जमा करवाई हुई राशि का विवरण एवं अपना नाम और पता तथा PAN या आधार कार्ड नम्बर, पत्र, फोन, E-mail अथवा WhatsApp द्वारा साधना धाम कार्यालय में अवश्य सूचित करें। जिससे आपको रसीद आसानी से प्राप्त हो जायेगी।

– **रवि कान्त भण्डारी,** प्रबन्धक, साधना धाम, मोबाइल: 09872574514, 08273494285

1. श्वेता अग्रवाल, पीलीभीत	150000	18. मुकेश कुमार गुप्ता, दिल्ली	11000
2. नीति अग्रवाल, हरिद्वार	101000	19. दीपक-सीमा शर्मा, कांगड़ा (हि.प्र.)	11000
3. गिरीश कुमार मोहन, हरिद्वार	51000	20. चन्दा सरोजबेन, अहमदाबाद	10500
4. अंजना मित्तल, गुरूग्राम	40000	21. अजय कुमार अग्रवाल, बरेली	10000
5. अजय कुमार अग्रवाल, बरेली	31000	22. स्वतन्त्र भण्डारी, अमृतसर	10000
6. मिलन शर्मा, दिल्ली	31000	23. कमला सिंह, कानपुर	10000
7. सुनीता कपूर, दिल्ली	31000	24. हरिओम सत्संग ग्रुप, दिल्ली	10000
8. सुशीला जायसवाल (कानपुर सत्संग)	25000	25. विजय गुलाटी, दिल्ली	10000
9. कमला सिंह, कानपुर	25000	26. कमलेश गौड़, कानपुर	6000
10. रमेश जायसवाल, कानपुर	25000	27. संजय कुमार अग्रवाल, फरीदाबाद	5100
11. गौरव जायसवाल, कानपुर	25000	28. चन्द्र प्रकाश गुप्ता, बरेली	5100
12. सतीश खोसला, नई दिल्ली	21000	29. रेखा नन्दराजोग, दिल्ली	5100
13. सचिन अग्रवाल, फरीदाबाद	11000	30. अतुल	5100
14. मुकेश कुमार गुप्ता, दिल्ली	11000	31. सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	5100
15. पवन कुमार सिंह, जयपुर	11000	32. राहुल भण्डारी, जालन्धर	5100
16. राजेन्द्र कुमार गुप्ता, दिल्ली	11000	33. सुनीति देवी अग्रवाल, पीलीभीत	5100
17. आद्या, अलाया (सुपुत्री सुमन भण्डारी), गुरूग्राम	11000	34. कृष्ण औतार अग्रवाल, बीसलपुर	5100

(शेष अगले पृष्ठ पर...)

(16.11.2023 से 13.2.2024 तक के दानदाताओं की सूची पिछले पृष्ठ से ...)

35. मधु खुल्लर, गुरूग्राम	5100
36. नीलू रल्हन, दिल्ली	5100
37. अनुज गुप्ता पुत्र राजेन्द्र गुप्ता, अलवर	5100
38. नवीन नन्दराजोग, दिल्ली	5100
39. रेखा नन्दराजोग, दिल्ली	5100
40. सुनीति देवी अग्रवाल, हरिद्वार	5100
41. डॉ. आकांक्षा अग्रवाल, मेरठ	5100
42. सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	5100
43. योगेन्द्र प्रताप सिंह, सिद्धार्थ नगर	5100
44. कर्नल के.के. सभरवाल, नोएडा	5001
45. ओम टेक्नो फैब	5000
46. हरपाल सिंह राजपूत, हरिद्वार	5000
47. सोहन लाल गुप्ता, दिल्ली	5000
48. अनिरुद्ध अग्निहोत्री, रुड़की	5000
49. सुमन भण्डारी, गुरूग्राम	5000
50. अनुराग कुमार, बंगलोर	5000
51. सुनील कान्त अग्रवाल, पीलीभीत	5000
52. सुनीति देवी अग्रवाल, पीलीभीत	5000
53. सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	5000
54. रुक्मणि देवी नन्दराजोग, दिल्ली	5000
55. तोष अग्रवाल, दिल्ली	4200
56. ओंकार, बीसलपुर	4100
57. आनन्द कुमार अग्निहोत्री, लखनऊ	4004
58. आलोक-अंकुर मित्तल, बिरानी, बीसलपुर	3300
59. राजेश अवस्थी	2501
60. आर.सी. गुप्ता, गाजियाबाद	2500
61. रेनू मेहता, दिल्ली	2500
62. शशि अग्रवाल, हरिद्वार	2500
63. मनोज गुप्ता/साधना गुप्ता, बीसलपुर	2500
64. दीपक अग्रवाल, पीलीभीत	2500
65. सम्भव गर्ग, बरेली	2500
66. सुशीला जायसवाल, मुम्बई	2500
67. सुरेश चन्द्र गुप्ता, कानपुर	2500
68. शोभा गुप्ता, कानपुर	2500
69. मुनीश चन्द्र शर्मा, बरेली	2500
70. किरण द्विवेदी, प्रयागराज	2500
71. शशि अग्रवाल, हरिद्वार	2500
72. भारती गुप्ता, बीसलपुर	2500
73. शशि अग्रवाल, हरिद्वार	2500
74. मनोज मिश्रा, बरेली	2100
75. नीता सहगल, नई दिल्ली	2100
76. सुदेश खुल्लर, मेरठ	2100
77. योगेश कुमार अग्रवाल, बीसलपुर	2100
78. प्रमोद कुमार मिश्र, अहमदाबाद	2100
79. अभिषेक पोरवाल, दिव्यापुर, कानपुर	2100
80. पार्वती चौधरी, अलवर	2100
81. कमलेश सिंह चौधरी, अलवर	2100
82. नीरज बहल, दिल्ली	2100
83. राम शंकर बाजपेयी, कानपुर	2100
84. अनिल चन्द्र मित्तल, बीसलपुर	2100
85. चन्दन शर्मा, गुरूग्राम	2100
86. सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल, बीसलपुर	2100

नोटः खेद है कि रु. 2100/- या अधिक राशि के कुछ दान ऐसे प्राप्त हुए हैं जिनके नाम की जानकारी न होने के कारण इस सूची में शामिल नहीं किये गये हैं।

श्री गुरुदेव निर्वाण दिवस साधना शिविर-2024

14 अप्रैल 2024 को पूज्य गुरुदेव को श्रद्धांजलि स्वरूप अखण्ड जाप होगा। 15 अप्रैल को प्रातः अखण्ड जाप की पूर्ति के समय गंगा के पावन तट पर पूज्य गुरुदेव को श्रद्धा सुमन अर्पित किये जायेंगे। तत्पश्चात् मन्दिर में आकर साधकगण अपनी श्रद्धांजलि के भाव गुरुदेव के चरणों में प्रस्तुत करेंगे। 15 अप्रैल को भण्डारे के बाद विश्राम रहेगा। शिविर 16 अप्रैल को प्रारम्भ करके 21 अप्रैल की प्रातः को पूर्ति की जायेगी।

साधना परिवार की कार्यकारिणी की बैठक 19 अप्रैल 2024 को कार्यालय में होगी। **20 अप्रैल को जनरल बॉडी की सभा रात्रि के समय धाम के प्रांगण में होगी।**

साधना शिविर में भाग लेने वाले साधक अपने आने की सूचना मैनेजर साधना-धाम को 15 दिन पूर्व देने की कृपा करें।

दिगोली शिविर-2024

दिगोली तपस्थली शिविर की तिथि 12 मार्च से 15 मार्च निश्चित किया गया है। भाग लेने वाले साधक गण कृपया अध्यक्ष जी को यथाशीघ्र सूचित करें।

बाल-साधना-शिविर-2024

शिविर स्थानः स्वामी रामानन्द साधना-धाम,
संन्यास रोड, कनखल, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

समय : 8 जून से 12 जून 2024 प्रातः तक

कुछ वर्षों से ग्रीष्मावकाश में बाल-साधना शिविर का आयोजन सफलतापूर्वक किया जा रहा है। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य है बालकों का आध्यात्मिक, चारित्रिक एवं शारीरिक विकास करना। पूज्य गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी की साधना पद्धति की सरल ढंग से जानकारी दी जायेगी एवं व्यावहारिक साधना के अन्तर्गत व्यावहारिक ज्ञान दिया जायेगा। शिविर में जाप का आवाहन, गीता पाठ, भजन एवं गोष्ठी का संचालन बालकों के द्वारा ही होगा अतः तैयारी करके आयें। प्रातः भ्रमण, खेल व योग के कार्यक्रम भी होंगे।

आवश्यक सामग्री : अपने पहनने के आवश्यक कपड़े, तौलिया, टूथपेस्ट व ब्रश, कंघा, साबुन, भ्रमण के लिये जूते, कापी, पैन एवं पेन्सिल।

बिस्तर एवं बर्तनों की व्यवस्था साधना-धाम की ओर से होगी।

कृपया अपने आने की सूचना 15 दिन पूर्व साधना-धाम में व्यवस्थापक महोदय को पत्र या फोन द्वारा अवश्य दें। (फोनः 01334-311821, मोबाइलः 08273494285)

प्रतियोगितायें

बच्चों को तीन ग्रुपों में बाँटा जाएगा।

1. पहला ग्रुप 7 वर्ष से 10 वर्ष तक के बच्चे - शिक्षाप्रद कहानियाँ।
2. दूसरा ग्रुप 11 वर्ष से 14 वर्ष तक के बच्चे - सन्तों की कहानियाँ एवं संस्मरण।
3. तीसरा ग्रुप 15 वर्ष से 20 वर्ष के बालक व बालिकायें - दिये गये विषय पर सामूहिक चर्चा (Group Discussion)।

श्री स्वामी रामानन्द जी साधना साहित्य

1.	अध्यात्म विकास	इन पुस्तकों में श्री स्वामी जी ने अपनी विकासवादी नवीनतम साधना पद्धति का विस्तार से वर्णन किया है।
2.	आध्यात्मिक साधना (प्रथम खण्ड)	
3.	आध्यात्मिक साधना (द्वितीय खण्ड)	
4.	Evolutionary Outlook on Life	
5.	Evolutionary Spiritualism	
6.	जीवन-रहस्य तथा उत्पादिनी शक्ति	काम शक्ति तथा अध्यात्म विषय पर स्वामी जी द्वारा विशद् व्याख्या
7.	गीता विमर्श	श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम 7 अध्यायों की स्वामी जी द्वारा विशद् व्याख्या
8.	व्यावहारिक साधना	पूज्य स्वामी जी द्वारा लिखित तीन लेखों – (1) साधकों के लिये, (2) दम्पत्ति के लिये, (3) माता-पिता के प्रति का संकलन
9.	कैलाश-दर्शन	पूज्य स्वामी जी ने कुछ साधकों के साथ कैलाश-पर्वत की यात्रा व परिक्रमा की थी। उस यात्रा का एवं उनकी आत्मानुभूति का विशद् वर्णन
10.	गीतोपनिषद	श्रीमद्भगवद्गीता के आठ से अठारह अध्याय तक स्वर्गीय श्री के.सी. नैयर जी द्वारा व्याख्या
11.	हमारी साधना	श्री पुरुषोत्तम भटनागर द्वारा सम्पादित
12.	हमारी उपासना	
13.	साधना और व्यवहार	
14.	अशान्ति में	
15.	मेरे विचार	
16.	As I Understand	
17.	My Pilgrimage to Kailash	
18.	Sex and Spirituality	जीवन-रहस्य (प्रो. डा. लक्ष्मी सक्सेना द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित पुस्तकें)
19.	Our Worship	हमारी साधना
20.	Our Spiritual Sadhana Part-I	आध्यात्मिक साधना (प्रथम खण्ड)
21.	Our Spiritual Sadhana Part-II	आध्यात्मिक साधना (द्वितीय खण्ड)
22.	स्वामी रामानन्द-एक आध्यात्मिक यात्रा	स्वस्पष्ट प्रो. डा. लक्ष्मी सक्सेना
23.	पत्र-पीयूष	कु. शीला गौहरी द्वारा साधकों के नाम स्वामी जी के पत्रों का संकलन
24.	स्वामी रामानन्द-चरित सुधा	स्व. डा. कविराज नरेन्द्र कुमार एवम् वैद्य श्री सत्यदेव
25.	स्वामी रामानन्द-वचनामृत	श्री जगदीश प्रसाद द्विवेदी द्वारा गुरुदेव की पुस्तकों से संकलन
26.	मेरी दक्षिण भारत-यात्रा	पूज्य सुमित्रा माँ जी द्वारा दक्षिण भारत यात्रा का रोचक वर्णन
27.	पत्तियाँ और फूल	भजन, पद, कीर्तन, आरती आदि का संकलन
28.	दैनिक आवाहन विधि	स्वामी जी की साधना प्रणाली पर आधारित – श्रीमती महेश प्रकाश
29.	Letters to Seekers	कु. शीला गौहरी एवं श्री विजय भण्डारी द्वारा साधकों के नाम स्वामी जी के अंग्रेजी पत्रों का संकलन
30.	आत्मा की ओर	
31.	जीवन विकास – एक दृष्टि	Evolutionary Outlook on Life का हिन्दी अनुवाद
32.	विकासात्मक अध्यात्म	Evolutionary Spiritualism का हिन्दी अनुवाद
33.	गुरु के प्रति निष्ठा	तेजेन्द्र प्रताप सिंह
34.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 1)	अनाम साधिका
35.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 2)	
36.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 3)	
37.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 4)	
38.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 5)	
39.	श्रीराम भजन माला	श्री सूर्य प्रसाद शुक्ल 'राम सरन'
40.	माँ का भाव भरा प्रसाद गुरु का दिव्य प्रसाद	मीरा गुप्ता
41.	पत्र-पीयूष सार	पत्र-पीयूष का संग्रहीत संस्करण
42.	गीता पाठ	
43.	गृहस्थ और साधना	
44.	प्रभु दर्शन	
45.	प्रभु प्रसाद मिले तो	
46.	गीता प्रवेशिका	हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी में गीता का संग्रहीत संस्करण – रमेश चन्द्र गुप्त

16.12.2023 को साधना धाम हरिद्वार में हवन का दृश्य

जन्म महोत्सव पर साधना धाम हरिद्वार की सजावट की एक झलक

गुरुदेव को माल्यार्पण करते हुए साधक गण

16.12.2023 को साधना मन्दिर हरिद्वार में जन्मोत्सव मनाते हुए

साधना धाम हरिद्वार में जन्मोत्सव के अवसर पर आयोजित
भजन सन्ध्या का आनन्द उठाते हुए साधक गण